आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" फरवरी 2025

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 40
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

I वर्ष –26 I अंक–2 I माघ – फाल्गुन स.2081 I फरवरी 2025

महाकुंभ 2025

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक
श्री दिलीप चतुर्वेदी
श्री महेश चतुर्वेदी
श्री शशांक चतुर्वेदी
श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

सम्मान समारोह

सांस्कृतिक कार्यक्रम

शिव की शक्ति, भक्ति और कृपा से आपका जीवन ऊर्जा से भरपूर हो।

Bharatgas
COOK FOOD. SERVE LOVE.

इस महाशिवरात्रि, घर में उजाले की तरह फैले खुशियाँ और हर किचन बने ऊर्जा का स्रोत।
रेखा गैस एजेंसी आपके हर उत्सव में आपकी ऊर्जा का हिस्सा बनकर गर्व महसूस करती है।

मंगल महाशिवरात्रि की पावन शुभकामनाएँ!

रेखा गॅस एजन्सी

द. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001
(0257) 2221095 | 2221195 | 2225195 | 2228495. rekhagas20032003@rediffmail.com

(र.क्र. 3071)

स्मृति शेष

स्व. श्रीमती सरोज
पत्नी स्व. श्री दयानंद जी
स्वर्गवास दि. 16.01.2018

स्व. श्रीमती पदम
पत्नी स्व. श्री हेमचंद्र जी
स्वर्गवास दि. 30.01.2018

स्व. श्रीमती गीता
पत्नी डॉ. दिवाकरनाथ जी
स्वर्गवास दि. 26.01.2012

श्रद्धावनत

सर्वश्री डॉ. दिवाकर नाथ, भरत चन्द्र, सुभाष चंद्र, सर्वेश चंद्र, हृदय कान्त, मोहन, विवेक चंद्र, पवन कुमार, मनीष , मोहिल एवं हितेष
श्रीमती उषा, रेखा, अंजू, प्रतिभा,चित्रा, मनीषा, शालिनी
एवं समस्त जौनमाने परिवार पुरा कन्हैरा

(र.क्र. 3074)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से अपनी बात	9
संपादकीय	10
कार्यकारिणी बैठक	11
सांस्कृतिक कार्यक्रम ग्वालियर	12
सार्वजनिक विनम्र अपील	13
बसंत के विभिन्न रूप तथा महत्व	15
जय सियाराम	16
!! हंस और काग !!	17
कौन है वह जो हमारी प्रगति में रुकावट उत्पन्न कर सकता है?	18
आध्यात्मिक उत्सव -महाकुंभ	19
शाखा समाचार	32
समाज समाचार	33
बिछड़े स्वजन	34

अंक 2
फ़रवरी 2025, वर्ष - 26

सभापति
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री शशांक चतुर्वेदी
मोबा. 9826086879

कोषाध्यक्ष
श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 9312242661

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. विनीता चौबे, भोपाल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', BM57, नेहरू नगर
करूणाधाम आश्रम के सामने, भोपाल
मोबा. 8707894349
ई- मेल :
sampadak2024.chandrika@gmail.com

उपसंपादक
लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, गाजियाबाद

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका
वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : शशांक चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक : **दिलीप सिकन्दरपुरिया**
वितरण सहयोगी : विश्वास चतुर्वेदी - 8160686094

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी समिति 2024–2027

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक:- डा० सतीश जी(नागपुर), श्री भरत जी (पूर्व सभापति) भोपाल,श्री आर.आर.जी (पूर्व सभापति) मुम्बई, श्री कमलेश जी पाण्डे(पूर्व सभापति) नोएडा, डॉ. प्रदीप जी (पूर्व सभापति) दिल्ली, ले. जन. विष्णुकांत जी(नोएडा), श्री विकास जी (कानपुर), श्री संतोष जी चौबे (भोपाल), श्री देवेन्द्र जी चौबे (गोंदिया), श्री महेश जी (दिल्ली)।

परामर्शदाता मण्डल:- श्री अविनाश जी (कानपुर), श्री कैलाश जी(कासगंज), डॉ. ऋषभ जी (देहरादून), श्री उपेन्द्र जी पाण्डे (कोलकाता),श्री भरत कुमार जी (रिषड़ा),श्री शिव जी (कोटा), श्रीमती बीना जी मिश्रा (मैनपुरी/आगरा), डॉ. निखिल जी (आगरा)

सभापति:- श्रीमती ऊषा जी भोपाल

उप-सभापति:- श्री मुनीन्द्र नाथ जी (नोयडा), श्री पंकज जी (मुम्बई), श्रीमती आभा जी (नागपुर), डॉ. कुश जी (इटावा), श्री विनोद जी (गुरूग्राम), श्री सुमंत जी (आगरा), श्री अंशुमान जी (जयपुर)

सचिव:- श्री शशांक जी (भोपाल)

सह-सचिव:- श्री आशुतोष जी (कानपुर), श्री करूणेश जी (ग्वालियर), श्री गोविन्द जी (जयपुर), श्री अभयराज जी (गुरूग्राम), श्री मनीष जी (कोटा), श्रीमती बबीता जी (लखनऊ), श्री संजय जी (अहमदाबाद)

कोषाध्यक्ष:- श्री ज्ञानेन्द्र जी (साहिबाबाद)

सम्पादक:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), उप सम्पादक:- श्री लोकेन्द्र जी(गाजियाबाद)

मा. कार्यकारिणी सदस्य गण:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), डा० राकेश जी (मथुरा),श्री मनीष जी (हरदोई), श्री लोकेन्द्र जी (गाजियाबाद), श्री भुवनेश कुमार जी चौबे (गोंदिया), श्री अजय जी चौबे (भोपाल), श्री राकेश कुमार जी 'चुनचुन' (बरेली), श्री विशाल जी (आगरा), श्री राहुल जी (मैनपुरी) श्री प्रदीप जी 'संजू' (गाजियाबाद), श्री राजीव जी (अहमदाबाद), श्री विवेक जी (मुम्बई),श्री विपिन जी (लखनऊ), श्री मनीष जी (दिल्ली), श्री ललित जी (लखनऊ), श्रीमती विनीता जी (देहरादून), श्री कृष्ण बल्लभ जी (बिलासपुर), श्री संजय जी मिश्रा (कानपुर), श्री सुदीप जी (फिरोजाबाद), श्री अभिषेक जी (ग्वालियर), श्री आशीष जी 'रानू' (आगरा), श्री प्रवेश जी (कानपुर), श्री आशीष सुभाष जी (आगरा), श्री हर्षमोहन जी (आगरा), श्री आलोक जी (कोटा), श्री सतेन्द्र जी (नोयडा), श्रीमती चित्रा जी (भोपाल), श्री नवीन जी (जहांगीरपुर/लखनऊ), श्री सौरभ जी (लखनऊ), श्रीमती अंजू जी (मुम्बई), श्रीमती अर्चना जी (जयपुर), श्रीमती इंदु जी (नोयडा), श्री नवीन जी (चेन्नई), श्री हितेष जी (पुरा), श्री तनुज जी चौबे (नागपुर), श्री अरूण जी (जयपुर), श्री हर्ष कमल जी (बनारस), श्रीमती अलका जी (करनाल), श्री विमल जी (नोयडा), श्री मनोज जी (सागर), श्रीमती क्षमा जी (ग्वालियर), श्री प्रवेश जी (चांपा,छ0ग0), श्री कृष्णकांत जी (हैदराबाद), श्रीमती मीता जी (कानपुर), श्री अनुराग जी 'बब्बल' (आगरा), श्री मधुपम जी (मुम्बई), श्री धनेश जी (साहिबाबाद), श्री कैलाश जी(देवास), डॉ. मीनाक्ष जी (भोपाल), श्री मुकेश गिरीश जी पाण्डे (कोलकाता), श्री गगन जी (पुरा)

स्थाई आमंत्रित:- श्री मनोज जी (बैंगलोर) , श्री पदम जी (लखनऊ), श्री अशोक जी (फरीदाबाद), श्री गिरधारी जी (जयपुर), श्री कमलेश जी रावत (कोटा), श्री विपिन जी पाण्डे (गाजियाबाद), श्री राजेन्द्रनाथ जी (प्रयागराज), डॉ. अपूर्व जी (फिरोजाबाद), डॉ. कपिल जी (आगरा), श्री अनिल जी (भोपाल), श्री अरविंद जी (दिल्ली) , श्री दिनकर राव जी (फरौली), श्री योगेन्द्रनाथ जी (ग्वालियर)

विशेष आमंत्रित:- श्री मधुकर जी पाठक (आगरा), श्री नीरज जी (चक्रधरपुर), श्री कौशल जी (दिल्ली), श्री अम्बर जी पाण्डे (भोपाल), श्री साकेत जी (मैनपुरी), श्री दीपक जी (लखनऊ), श्रीमती तृप्ति जी (पटना), श्री अंकुर जी (कटनी), श्री शैलेन्द्र जी (उचाड़), श्री अनुराग जी 'टिंचू' (कानपुर), श्रीमती शिखा जी पाठक (थाणे), श्रीमती अमिता जी (लखनऊ), श्री उमेश जी (बुलंदशहर), श्री ललित जी (जयपुर/नोयडा), श्री श्यामलाल जी (भिण्ड), श्री आलोक जी (जयपुर), श्री संजय जी (लखनऊ),श्रीमती मधु जी (देहरादून), श्री धर्मेन्द्र जी (कानपुर), श्री मनीष जी (इटावा), श्री पीयूष जी (पूना), श्री जितेंद्र जी (पूना), श्री मधुर जी (बैंगलोर), श्री यदुवेश जी (पुरा/लखनऊ), श्री नवीन जी (बैंगलोर), श्री दिलीप जी (हरिद्वार), श्री शैलेन्द्र जी (फिरोजाबाद), श्री प्रवीण जी (हैदराबाद), श्री नीलकमल जी (कलकत्ता), श्री मुकेश जी (तरसोखर/रिसड़ा), श्री शैलेन्द्र जी (फरीदाबाद), श्री नरेश जी (भोपाल), श्री विश्वास जी (भोपाल), श्रीमती वंदना जी (रिसड़ा), श्री प्रशांत जी (मथुरा), श्री नरेन्द्र कुमार जी चौबे (ग्वालियर), श्री भूषण जी (साहिबाबाद), श्री दुर्गेश जी (जयपुर), श्री अनुराग जी (गुरूग्राम), श्री विशाल जी (दानपुर) श्री प्रवीण जी 'छौना'(फरौली), श्री लोकेन्द्र (कानपुर)

मूल निवास प्रकोष्ठ:- श्री गगन जी (पुरा) संयोजक, श्री जय चतुर्वेदी नानू फरौली, श्री गोविन्द चतुर्वेदी (जहांगीरपुर), श्री सौरभ "आशू" (पुरा), श्री समर्थ (होलीपुरा), श्री शैलेन्द्र (फरौली), श्री मधुर (पुरा), श्री धर्मेश चतुर्वेदी (पिनाहट)।

शाखा सभा प्रकोष्ठ:- 1) ले. जन. विष्णु कांत जी नोएडा, 2)श्री विवेक जी, मुंबई 3)श्री अजय जी,लखनऊ 4) श्री अजय जी तिवारी, ग्वालियर 5)श्री सुनील जी, जयपुर 6) श्री विनय जी,कोटा 7) श्रीमती नीतिका जी, गुरुग्राम 9) श्री प्रदीप जी,गाजियाबाद 10) श्री सुशील जी, फरीदाबाद 12) श्री मुकेश जी,आगरा रजि.) 13) श्री संजय जी, अहमदाबाद 14)श्री पंकज जी, हरदोई, 15) श्री भूपेन्द्र जी, जहांगीरपुर सभा 16) श्री गौरी शंकर जी,समाज,फरौली 17) श्री महेश जी, देहली सभा 18) श्री शैलेंद्र जी, मथुरा सभा 19) श्री ऋषभ जी, देहरादून 20) श्री राजेन्द्र जी, फर्रुखाबाद सभा, 21) श्री एम. बाबू, मैनपुरी सभा, 22) श्री समीर चतुर्वेदी, पटना सभा, 23) डॉ. अरुण चतुर्वेदी, नागपुर सभा, 24) दिलीप चतुर्वेदी, हरिद्वार सभा

युवा प्रकोष्ठ:- (1) श्री मधुपम जी- मुम्बई (संयोजक) (2) श्री खगेश जी (कोलकता) सह-संयोजक (3) श्री नवीन जी (मथुरा) (4) श्री प्रमेन्द्र जी (ग्वालियर) (5) श्री आशीष जी (कोलकाता) (6) श्री नमन जी (फिरोजाबाद) (7) श्री सुनील जी (जयपुर) (8) श्री हेमंत जी (कोलकाता) (9) श्री नमन जी (लखनऊ) (10) श्री दिवस जी (लखनऊ) (11) श्री शशांक जी (जमुआ रामगढ़)

प्रवासी भारतीय प्रकोष्ठ:- (1) श्री विवेक जी-संयोजक (मम्बई)

सांस्कृतिक प्रकोष्ठ : अरविंद चतुर्वेदी दिल्ली संयोजक, संजय चतुर्वेदी फरीदाबाद

चिकित्सा प्रकोष्ठ:- (3) डॉ. मीनाक्ष जी-संयोजक (भोपाल)

उद्यमिता प्रकोष्ठ:- अजय चौबे, भोपाल

महिला प्रकोष्ठ:- श्रीमती शिवांगी जी (संयोजक), श्रीमती अनुपमा जी (उप संयोजक)

महासभा कार्यालय: 405/406, चिरंजीव टावर नेहरू प्लेस, नई दिल्ली 110019

।। अपनों से अपनी बात।।

ऊषा चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

मत मताँतर होते हैं कुटुंब में,
पर मनभेद कभी मत करना।
वह बात जिसमें हो जग हँसाई,
ऐसी जिद कभी मत करना।

आदरणीय बंधुवर/भगिनी

सादर पालागन

महाकुंभ की धूम मची हुई है। लाखों लोगों के अमृत स्नान हो चुके और लाखों लोग अभी प्रतीक्षा में हैं। एक साथ लाखों लोगों का स्नान हमारी भारतीय संस्कृति के सहचर की भावना को प्रदर्शित करती है। कोई भी कार्य हो सहचर की भावना के अभाव में सिद्ध नहीं होता। विध्न संतोषी जीव हर जगह होते हैं। व्यवस्थित महाकुंभ में भी अव्यवस्था फैलाने का प्रयास किया। परिणाम नागा साधुओं के स्नान में दिखा।

हमारी महिला प्रकोष्ठ की बहनों का व्हाट्सएप ग्रुप देख रही थी जिसमें कुछ बहिनें समूह में कुंभ स्नान की बात कर रही थी। सामूहिकता की बात पढ़ कर प्रसन्नता हुई। निश्चित ऐसे ही समूह बनाकर महाकुंभ स्नान का पूर्ण लाभ लेना चाहिए।

दूसरा पर्व मस्त होली का आने वाला है। रसिया और होली का आनंद हमारे जीवन में एक नया उत्साह भरेगा। सामूहिकता एवं सहचर जितना बढ़ेगा हमारा जीवन उतना ही आनंदमय एवं उत्साहवर्धक होगा।

जयपुर में दिनांक 23 जनवरी से 26 जनवरी तक जयपुर युवा सभा द्वारा क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया जा रहा है, जो हमारे समाज के नव युवकों के आकर्षण का केंद्र रहेगा। शाखा सभाएं भी अब नवयुवकों एवं किशोर के रुझान के कार्यक्रम आयोजित करने लगे हैं। जयपुर सभा का कार्यक्रम सफल हो इसके लिए उन्हें कार्यक्रम के आयोजकों को शुभकामनाएं। यह क्रिकेट टूर्नामेंट एक ऐसे अनोखे व्यक्तित्व के स्मृति में आयोजित किया जा रहा है। जिसने चतुर्वेदी समाज के लिए बहुत कुछ किया वह थे श्रद्धेय राधेलाल चतुर्वेदी जी जिनका व्यक्तित्व और कृतित्व हमारी नई पीढ़ी को दिशा देगा। युवाओं का प्रथम महासम्मेलन जयपुर में आपके सानिध्य में ही संपन्न हुआ था । अब उन्हीं की स्मृति में नवयुवकों का दूसरा कार्यक्रम अन्नपूर्णा योजना के लिए सहयोग राशि देने वालों की संख्या निरंतर बढ़ रही है यह भी संतोष का विषय है।

हमारी चतुर्वेदी चंद्रिका भी आत्मनिर्भर बने इसके लिए सभी से आग्रह है अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करें। आर्थिक एवं रचनात्मक। आपके पत्रों के प्रतीक्षा मुझे निरंतर रहती है ताकि आपके बहुमूल्य सुझावों पर अमल कर सके।

हमारे समाज की बहुत से परिवारजन हमसे बिछड़ गए उन सभी लोगों को भावभीनी श्रद्धांजलि एवं परिवार को धैर्य रखने की ईश्वर से कामना समाज विकास के पथ पर अग्रसर हो। इसलिए लिए आइये हम सब कदम से कदम मिला कर चले। प्रकोष्ठों की कार्य योजनाएं बन गई है। कार्यक्रम में परिणित होकर आप लोगों के सम्मुख आऐगी। बसंत उत्सव महाशिवरात्रि एवं होली की अग्रिम शुभकामनाएं।

सादर धन्यवाद सहित

दिलीप सिकंदरपुरिया

संपादकीय

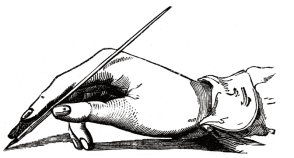

चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार में सभी का हार्दिक अभिनन्दन एवं सादर पालागन !!

लगभग 144 वर्षों बाद प्रयागराज में ऐसे महाकुंभ का संजोग बना है,जो विश्व का सबसे प्राचीन एवं विशाल मेला है,जिसमें सनातन धर्म के सभी 19 अखाड़ो के साथ ही अध्यात्मिक व सामाजिक संगठनों ने अपने अपने शिविर स्थापित कर लिए हैं। महाकुंभ में एक सत्संग में स्वामी विचारानंद ने बताया कि इतिहास में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी महाकुंभ का वर्णन किया है। स्वामी विचारानंद ने कहा कि महाकुंभ एक विशाल अध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक आंदोलन भी है, जिससे सनातन धर्म में कुप्रथाओं को दूर करने के साथ ही अध्यात्मिक सांस्कृतिक सामाजिक एकता का विकास होता हैं।लेकिन दुर्भाग्यवश आज हिन्दुओं में सामाजिक, पारिवारिक एवं व्यक्तिगत विघटन एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। स्वामी विचारानंद ने कहा---- विवाहःसुखदुःखयो सामान्यः अर्थात वैवाहिक जीवन में सुख दुःख सामान्य है। लेकिन *अविश्वासेण और अनादरेण बिखरावः*अर्थात एक दूसरे का अविश्वास व अनादर बिखराव कारण बनता है।

संयोगवश एक सामाजिक सर्वे को पढ़ने पर पता चला कि आजकल सनातन धर्म में संयुक्त परिवार बिखराव 86% हो गया है , प्रसन्नता की बात है कि लगभग 94% लोग पारिवारिक व्यवस्था में अभी भी विश्वास रखते हैं और 81% युवा वैवाहिक व्यवस्था को बनाए रखना चाहते हैं।

अपने समाज में भी अब वैवाहिक संबंधों में स्थायित्व एक गंभीर समस्या बनता जा रहा है। आपसी गहन विचार विमर्श में पाया गया कि इस वैवाहिक विघटन में युवक - युवती के अहम के साथ परिवारों की भूमिका भी चिंतन का विषय हैं। महासभा ने अपने स्तर पर एक समिति बना कर इस समस्या को हल करने का प्रयास किया, कुछ मामलों में सफलता भी मिली, परन्तु वह आंशिक ही मानी जाएगी।

प्रायः आधुनिक युग में पति पत्नी दोनों अधिक शिक्षित एवं कमाऊ होते हैं, प्रायः आर्थिक एवं भौतिकवाद के कारणों से अहम् एवं अन्य समस्याएं उत्पन्न होती है। यदि विवाह पूर्व ही पारिवारिक एवं आर्थिक परिस्थितियों पर स्पष्ट विचार विमर्श कर लिया जाए तो वैवाहिक विखराव की संभावना कम हो सकती है, ऐसा विशेषज्ञों का मानना है।

परिवारों को भी युगल को आपसी समस्याएं विचार विमर्श से ही हल करने पर जोर देते रहना चाहिए, युगल विवाद में किसी का पक्ष नहीं लेना चाहिए, युगल को सहयोगी दृष्टिकोण अपनाने का सुझाव एवं प्रयास करें। स्वामी जी कहते हैं--- सहिष्णुतेणः,विश्वसेणः,विचारेणतः बिखराव निवर्तयेतः अर्थात आपसी सहिष्णुता, विश्वास एवं विचार विमर्श से ही वैवाहिक विखराव से बचा जा सकता है। यदि सभी प्रयासों के बाबजूद भी वैवाहिक जीवन में तनाव बना रहता है तो युगल को कुछ दिन कहीं एक साथ घूमने जाने या आपस में कुछ दिन दूर रहने की सलाह दी जा सकती हैं। फिर भी वैवाहिक जीवन सामान्य न हो तो किसी भी कानूनी कार्रवाई से पहले महासभा समिति की मध्यस्थता को प्रमुखता देते हुए प्रयास किया जा सकता है।उपरोक्त सर्वे में एक रोचक तथ्य यह भी है कि जिन युवक- युवतियों के विवाद को पांच साल से अधिक हो चुके हैं, उनमें से 69% लोग एक दूसरे को सम्मान देते हुए पुनः संबंध बनाना चाहते हैं।

पत्रिका के लिए सदैव आपके लेख एवं सुझाव का स्वागत है।

महाकुंभ, बसंत पंचमी,माघी पूर्णिमा एवं महाशिवरात्रि पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

- दिलीप सिकंदरपुरिया

कार्यकारिणी बैठक
22 दिसंबर 2024, ग्वालियर (म.प्र.)

21 दिसंबर 24 को साल की सबसे लंबी रात को ग्वालियर में सांस्कृतिक कार्यक्रम में झिलमिलाते तारों (बच्चों) के जोश एवं हौसले का उल्लास रविवार 22 दिसम्बर को महासभा कार्यकारिणी मीटिंग की जीवन्तता में भी दिखा। कार्यकारिणी मीटिंग की शुभारंभ ग्वालियर सभा के अध्यक्ष श्री अजय तिवारी द्वारा महासभा अध्यक्षा श्रीमती उषा जी, संरक्षक सर्वश्री डॉ. सतीश जी, डॉ प्रदीप जी, महेश जी के साथ महासभा के मंत्री शशांक जी, कोषाध्यक्ष ज्ञानेंद्र जी तथा संपादक दिलीप जी को मंचासीन करते हुए किया। मंचासीन अतिथियों को शाल ओढ़ाकर प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। मीटिंग की औपचारिक शुरुआत श्री टीकेन्द्र नाथ जी के मंगलाचरण से हुई। इसके बाद प्रो. नागेन्द्र जी ने स्वागत सम्बोधन में ग्वालियर में चतुर्वेदी समाज के विकास का विवरण देते हुए सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। तब सदन ने तालियां बजा कर उनका अभिनंदन किया। ग्वालियर सभा ने अन्नपूर्णा योजना में रु. 24000/ का योगदान दिया। इसके बाद मंत्री शशांक जी ने सदन को विगत कार्यकारिणी मीटिंग की रिपोर्ट पढ़कर जानकारी दी। जिसका सदन ने सर्वसम्मति से अनुमोदन कर दिया। फिर ज्ञानेंद्र जी ने सदन को बताया कि विगत मीटिंग से अब तक छः सौ तिरासी सदस्यों से आवेदन प्राप्त हुए,सदन ने सभी की सदस्यता को मान्यता दे दी। लोकेन्द्रनाथ जी ने कुछ सदस्यता फार्म मिसिंग होने की सूचना दी। इसके बाद एक प्रस्ताव मंत्री द्वारा पुनः प्रस्तावित किया गया कि सदस्यता आवेदन पत्र जो डिजिटल माध्यम से प्राप्त होंगे, वह किसी कार्यकारिणी सदस्य से सत्यापित करने के बाद स्वीकृत कर लिए जाए। नगरों में बढ़ती दूरियां एवं समयाभाव के कारण ऐसा करना जरूरी हो गया है। इस माध्यम से प्राप्त किए गए आवेदन पत्र को महासभा सदस्यता प्रदान की जाय। जिसे सदन ने हर्षाध्वनि के साथ सर्वसम्मति से पारित कर दिया। जिस पर डॉ.प्रदीप जी, सतीश जी, ज्ञानेंद्र जी, पंकज जी,अभय राज जी, ललित जी,यदुवेश जी ने भी अपने अपने सुझाव दिए। मंत्री शशांक जी के एक अन्य प्रस्ताव कि महासभा का विगत 20 वर्षों का रिकॉर्ड जो कि महासभा के दिल्ली ऑफिस में स्थित है। उसका अवलोकन करके नियमानुसार विधिक जरूरत को देखते हुए विगत 8 वर्षों का रिकॉर्ड रखकर शेष सामाग्री आदि नष्ट कर दी जाए।रिकॉर्ड के संबंध निर्णय लेने के लिए सर्वश्री डॉ. प्रदीप जी, महेश जी, मुनीन्द्र जी, ज्ञानेंद्र जी एवं लोकेंद्र जी को अधिकृत किया जाय। इस प्रस्ताव सदन ने सर्वसम्मति से पारित कर किया। फिर श्री लोकेंद्र जी संयोजक शाखा सभा ने बताया कि लगभग 23 शाखा सभाएं महासभा से संबद्धता ले चुकी है। महासभा द्वारा नियमानुसार निर्णय लेकर उनको सबद्धता प्रदान की गई। सभापति उषा जी एवं मंत्री ने उक्त प्रमाण पत्र शाखा सभा के अध्यक्षों को प्रदान किए गए। इसके बाद सभापति ने अपने सभी आंगुन्तुको का हार्दिक स्वागत करते हुए बताया कि अन्नपूर्णा योजना में 45 परिवारों को छः हजार रुपए प्रति तिमाही भेजे जाते हैं। मंत्री जी ने कुल संग्रहित धन राशि की जानकारी दी। इसके बाद उषा जी ने भविष्य में प्रस्तावित युवा महोत्सव तथा सामूहिक मेडिकल वीमा के विषय में सदन से सुझाव आमंत्रित किए।जिस पर विस्तृत चर्चा में डॉ. मनीष जी (कोटा), राहुल जी (मैनपुरी), विशाल जी (आगरा), नमन जी (लखनऊ), अभय राज (गुरुग्राम), विशाल जी (आगरा), धर्मेशजी (पिनाहट), ललित जी (लखनऊ) ने अपने विचार व्यक्त किए। वरिष्ठ सदस्य डॉ.अपूर्व जी (फिरोजाबाद) ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि युवाओं के विकास में क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित की गई, उन्होंने बताया कि भविष्य में महासभा के सहयोग से युवा सहभागिता के लिए संगीत प्रतियोगिता आयोजित करने की घोषणा की। इसके बाद महासभा ने ग्वालियर समाज के सात कर्णधारों सर्वे श्री माधुरी मोहन जी,छैल बिहारी जी,नानक चंद जी, विश्वनाथ जी,प्रकाश मिश्र जी, डॉ. अपूर्व जी तथा श्रीमती सुबोध जी को उनकी व्यक्तिगत उपलब्धियों एवं सामाजिक कार्यों हेतु सम्मानित किया गया। सभापति उषा जी,मंत्री शशांक जी व संरक्षक द्वय डॉ. सतीश जी, डॉ. प्रदीप जी के साथ उन लोगों को शॉल श्रीफल, सम्मान पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किए। इसके बाद सतीश जी एवं डॉ प्रदीप जी के सारगर्भित सम्बोधन हुए। अंत में सभापति उषा जी ने अपने सम्बोधन में सभी कार्यकारिणी सदस्यों से सदस्यता अभियान को जोर शोर से जारी रखते हुए युवा महोत्सव की तैयारियां करें, अंत में विगत मीटिंग के बाद बिछुडे. स्वजनों को श्रद्धांजलि देकर मीटिंग की समाप्ति हुई।

– विवरण प्रस्तुति
शशांक चतुर्वेदी
दिलीप सिकंरपुरिया, आशुतोष चतुर्वेदी

सांस्कृतिक कार्यक्रम ग्वालियर

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा, ग्वालियर, म. प्र. का वार्षिक उत्सव दिनांक 21 दिसम्बर 2024 को चैम्बर ऑफ कॉमर्स में श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी सभापति , श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के मुख्य आतिथ्य मैं सम्पन्न हुआ।कार्यक्रम के प्रारंभ में शाखा सभा ग्वालियर के अध्यक्ष श्री अजय तिवारी ने अथितियों का स्वागत किया तथा सभा की गतिविधियों की जानकारी दी।इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री सतीश चौबे, भूतपूर्व मंत्री महाराष्ट्र सरकार, संरक्षक महासभा ने कार्यक्रम आयोजन के लिए शाखा सभा ग्वालियर का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर महासभा संरक्षक डॉ प्रदीप जी, श्री महेश जी, सचिव श्री शशांक जी , अन्य कार्यकारिणी सदस्य तथा शाखा सभा के संरक्षक श्री योगेंद्र जी, श्री सुधीर जी उपस्थित रहे। कार्यक्रम मे मेघावी विद्यार्थी सम्मान के अंतर्गत कु. वंशिका चतुर्वेदी पुत्री श्री प्रमेन्द्र चतुर्वेदी को जीवाजी विश्वविद्यालय की बी.बी.ए. की मैरिट लिस्ट में स्थान प्राप्त करने, कु. सान्या पुत्री श्री संदीप चतुर्वेदी को कॉमर्स संकाय कक्षा 12 मैं सर्वाधिक अंक प्राप्त करने तथा कु. अनुष्का पुत्री श्री प्रदीप चतुर्वेदी को NEET मैं चयन होने पर प्रशस्ति पत्र एवम नगद राशि 2100 प्रदान कर सम्मानित किया गया। नगद पुरुस्कार डॉ मनोज जी, डॉ वैभव जी तथा श्री मुकुल चतुर्वेदी जी के द्वारा प्रदान किये गए। कार्यक्रम में समाज के महा रक्तदाता श्री मुकेश चतुर्वेदी जी जिन्होंने अभी तक 44 बार रक्तदान कर समाज को गौरान्वित किया है, को सम्मानित किया गया।

अगले चरण मैं समाज की उभरती हुई प्रतिभाओ हेतु नृत्य प्रतियोगिता आयोजित की गई , जिसमें विजेताओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमती अनीता , श्रीमती रौली जी के द्वारा किया गया। शाखा सभा सचिव श्री आकाश जी के द्वारा सभी उपस्थित लोगों का आभार प्रकट किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने मैं श्री अमरकांत जी, श्री राकेश जी, श्री करुणेश जी, श्री नरेन्द्र चौबे जी,श्री अनूप चौबे जी, श्री कृष्ण गोपाल जी, श्री आलोक-सुनील जी, श्री अभिनव जी,श्री कुलदीप जी, श्री अभिषेक जी(गप्पू), श्री प्रमेन्द्र जी, श्री संदीप, डॉ वैभव जी, श्री दीपकान्त जी, श्री प्रशांत जी, श्री अवनीश जी का विशेष योगदान रहा।

सार्वजनिक विनम्र अपील
11.01.2025

सम्मानीय बन्धुवर/बहिन जी
सादर पालागन

सजातीय बान्धवों को एक सांकेतिक सहयोग राशि रु २४००० वार्षिक(रु. २०००/ – प्रति माह के अनुसार) से विगत कई वर्षों से श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा समाजहित के लिए, बांधवों के अमूल्य सहयोग से अन्नपूर्णा एवं छात्रवृत्ति सहायता अपने ही समाज के 41 परिवारों के मध्य प्रदान की जा रही है। वर्तमान में यह सहायता राशि त्रैमासिक अप्रैल, जुलाई,अक्टूबर तथा जनवरी के प्रथम सप्ताह सीधे उनके बैंक खाते हस्तांतरित की जा रही है । वित्तीय वर्ष २०२४–२५ की प्रथम, द्वितीय,तृतीय तथा चतुर्थ तिमाही की सहयोग राशि Rs. 2,56,200/– लाभार्थियों के – बैंक खातों में सीधे भेजी जा चुकी है।

सहयोग देने वाले बांधवों के नाम तथा उन के द्वारा प्रदत्त सहयोग राशि :–

26. श्रीमती कामिनी देवी की पुण्य स्मृति में श्री गजेंद्र चतुर्वेदी (लखनऊ) द्वारा Rs 5100/–
27. श्रीमती कस्तूरी देवी की पुण्य स्मृति में श्री जगदीश जी (भोपाल) द्वारा Rs.5100/–
28. अपनी मौसी स्व प्रेमलता (प्यानो) की पुण्य स्मृति (30.04.2024) में सुश्री हर्षिता सुपुत्री श्री शेखर एवं श्रीमती तारा चतुर्वेदी (चंद्रपुर/इंदौर) द्वारा Rs .12,000/–
29. अपने पूज्य पति स्व. दीपक चतुर्वेदी की पुण्य स्मृति में श्रीमती शशि जी (अजमेर) द्वारा Rs.5100/–
30. श्री माथुर चतुर्वेदी समुदाय मुंबई द्वारा – Rs.3,00,000/–
31. श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (कानपुर) द्वारा –Rs 5100/–
32. अपने बाबा स्वर्गीय प्यारेलाल जी चतुर्वेदी तथा दादी स्व श्रीमती शकुंतला जी की स्मृति में श्रीमती आकांक्षा चतुर्वेदी पुत्री श्री अजय एवं श्रीमती बीना जी (कमतरी/कानपुर) द्वारा Rs 11,000/–
33. अपने माता श्रीमती रेणु जी तथा पिता श्री पदम जी की ५०वीं शादी सालगिरह के उपलक्ष्य में श्री तुषार चतुर्वेदी (तरसोख़र/ लंदन) द्वारा Rs 5100/–
34. अपने पिता श्री स्व. राकेश जी के जन्मदिन की स्मृति में श्री अनुज जी (बिजकोली/ग़ाज़ियाबाद) द्वारा Rs.12,000/–
35. श्री अनुपम चतुर्वेदी द्वारा अपने पिता श्री अशोक कुमार चतुर्वेदी की स्मृति में Rs1100/–
36. श्री हृदय नाथ जी चतुर्वेदी (होलीपुरा/ भोपाल) द्वारा Rs– 11000/–
37. अपनी माता स्व. शकुंतला जी की स्मृति में श्री मनोज चतुर्वेदी (सागर/आगरा) द्वारा – 2100/–
38. अपने पिता श्री ओंकार पांडे के स्मृति में श्री संजय चतुर्वेदी (होलीपुरा/लखनऊ) द्वारा Rs.5100/–
39. अपने बाबा श्री पृथ्वी नाथ जी स्मृति में हर्ष चतुर्वेदी(अमेरिका) सुपुत्र श्री किशोर चतुर्वेदी (आगरा/भोपाल) द्वारा Rs.12,000 /–
40. ताऊजी स्व. कामिनी मोहन जी की पुण्य तिथि (5 जून) पर हर्ष मोहन @मोहित द्वारा अन्नपूर्णा सहायतार्थ 6000/– (र.क्र.– 2238)
41. श्री रुचिर सुपुत्र श्री कमलेश जी, झाँसी –12000/–
42. श्री आनंद जी,प्रयागराज – 11000/–
43. अपने पिता श्री यतीश चंद्र जी स्मृति में श्री दिवस चातुर्वेदी (लखनऊ) द्वारा Rs. 11,000/–
44. श्री रचित सुपुत्र श्री कमलेश जी, झाँसी –12000/–
45. सौ. आरुषी–चि.मृदुल के शुभविवाह (11 मार्च 2024) के अवसर पर श्री राजीव जी (मैनपुरी/ लखनऊ) ने – 2100/
46. स्वर्गीय श्रीमती सुषमा चतुर्वेदी (कछपुरा) पत्नी स्वर्गीय डॉ. श्री यतींद्र नाथ चतुर्वेदी (औरैया/सिकंदरपुर) की स्मृति में उनकी पुत्री डॉ. प्राची चतुर्वेदी (होलीपुरा/भोपाल) द्वारा 5000/– अन्नपूर्णा सहायतार्थ दिए गए।
47. स्व.श्रीमती गीता चतुर्वेदी की स्मृति में श्री दिवाकर नाथ चतुर्वेदी (पुरा/भोपाल) द्वारा 15000/–
48. श्रीमती विमला चतुर्वेदी पत्नी स्व. जयप्रकाश चतुर्वेदी (फरौली/भोपाल) द्वारा– 11000/–
49. श्री अशोक जी एवम श्री आनंद जी, हवेली होलीपुरा द्वारा अन्नपूर्णा सहायता हेतु – 24,000/–
50. श्री कृष्ण कांत चतुर्वेदी (राघो) 12000/ (– पुरा/हैदराबाद), श्री प्रणव चतुर्वेदी (पंकू)(कमतरी/ हैदराबाद) द्वारा 5000/– एवं श्रीमती बीना मिश्रा(मैनपुरी/आगरा) द्वारा 8000/–

कुल जमा 25000/–

51. स्वयंभू चतुर्वेदी, बैंगलोर– 24000/–

52. स्व.मुक्ता प्रसाद जी (फरौली/मुंबई) की स्मृति में जयदीप जी द्वारा 5100/-
53. अपने पौत्र चि. सहस्त्र पुत्र श्री नितिन-श्रीमती अंकिता के जन्मदिन के उपलक्ष्य में श्री नवीन जी-श्रीमती मधु (जहांगीरपुर /लखनऊ) द्वारा रूपया 2100/-
54. श्री प्रभाकर तथा श्री शरद चतुर्वेदी (हिन्डौन/लखनऊ) के द्वारा अपने पिता स्व. श्री बैकुण्ठ नाथ चतुर्वेदी एवं माँ स्व. श्रीमती शान्ती देवी (जावित्री देवी) की पावन स्मृति में 24000/-
55. पितृ पक्ष के अवसर पर , अपने पूर्वजों स्व श्री बाबूराम जी, पिता श्री कामता प्रसाद जी एवं माता श्री अंगूरी देवी तथा अन्य सभी बुजुर्गों की पुण्य स्मृति मैं श्री भुवन कुमार चतुर्वेदी (मैनपुरी/गुरुग्राम) एवं परिवार द्वारा - Rs. 36000/-
56. श्रीमती शीला चतुर्वेदी की स्मृति में श्री कृष्णकांत जी (होलीपुरा/लखनऊ) द्वारा-12000,
57. धर्मेंद्र जी,(पिनाहट) -2100/-
58. श्री एकांश सुधीर जी, नोएडा द्वारा अपने बाबा स्व.श्री प्रताप चंद्र जी व दादी स्व. श्रीमती कस्तूरी देवी की स्मृति में -5100/-
59. श्रीमती छमा पुनीत चतुर्वेदी, ग्वालियर -2100/-
60. श्री नमन चतुर्वेदी -2100/-
61. श्री विनोद चतुर्वेदी गुरुग्राम -5100/-
62. दिवस चतुर्वेदी,लखनऊ द्वारा पुत्ररत्न की प्राप्ति के अवसर पर -5100/-
63. श्री रूपक चतुर्वेदी लखनऊ द्वारा- 5100/-
64. स्व. लक्ष्मी नारायण ठाकुर की हवेली परिवार होलीपुरा की ओर से डॉ. मनोज चतुर्वेदी (ग्वालियर) द्वारा 12000/-
65. श्रीमती नीतिका अभय राज चतुर्वेदी (गुरुग्राम) -2100/-
66. श्रीमती अनीता चतुर्वेदी, नोएडा 1100/-
67. सुश्री सिद्धि चतुर्वेदी सुपुत्री श्रीमती निधि एवं श्री मनीष कुमार चतुर्वेदी (फरौली/गाजियाबाद) के जन्मदिन के अवसर पर श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (फरौली/गाजियाबाद) द्वारा महासभा अन्नपूर्णा -5100/-
68. श्री दीपक चतुर्वेदी, लखनऊ 1000/-
69. श्री पदम चतुर्वेदी, लखनऊ 1000/-
70. डॉ. मनीष चतुर्वेदी, कोटा 1100/-
71. धनेश चतुर्वेदी, साहिबाबाद -11000
72. श्रीमती आभा चतुर्वेदी, नागपुर -25,000/-
73. विवेक चतुर्वेदी, मुम्बई -1,00,000/-
74. डॉ. राकेश चतुर्वेदी, मथुरा -5200/-
75. बीना मिश्रा, आगरा - 1100/-
76. स्वर्गीय श्री दयाशंकर चतुर्वेदी (कानपुर/होलीपुरा) की पुण्य तिथि (17/10/24) पर उनके पुत्रों राजीव-संजीव एवं समस्त कक्का परिवार रु. 24,000/-
77. शैवी चतुर्वेदी पुत्री गजेंद्र चतुर्वेदी (फरौली/हावडा) द्वारा अपने बाबा स्व. गुरुदत्त चतुर्वेदी (बिटटन) की पुण्य तिथि में 2100/-
78. चि.अर्पित चतुर्वेदी पुत्र श्री पवन चतुर्वेदी (पुरा/भोपाल) की नियुक्ति येस बैंक भोपाल में कलेक्शन मैनेजर के पद पर हुई। इस उपलक्ष्य में अन्नपूर्णा योजना में श्रीमती मनीषा-श्री पवन चतुर्वेदी ने 2100/- प्रदान किये। बधाई।
79. श्रीमती प्रीति चतुर्वेदी-श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (कोषाध्यक्ष,श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा) (फरौली/साहिबाबाद) की विवाह की वर्षगाँठ की अवसर पर अन्नपूर्णा सहायतार्थ 11000/- प्रदान करें।
80) अपर्णा चतुर्वेदी,आगरा अन्नपूर्णा सहायतार्थ 11000/-
81) मनोज जी (चंद्रपुर/सागर) ने अपने पुत्र के विवाह के अवसर पर अन्नपूर्णा सहायतार्थ 5000/-
82) चि.शुभम के विवाह के अवसर पर श्री संजय मिश्रा (कानपुर) द्वारा 1100/-
83) सौ. अपर्णा के विवाह के अवसर पर श्री कृष्ण गोपाल चतुर्वेदी द्वारा 1100/-
84. श्री शिशिर चतुर्वेदी, जालंधर -2100
85. श्री विश्वतोष चतुर्वेदी, कानपुर -1100
86. श्री विष्णु कांत चतुर्वेदी, नोयडा 12,000
87. श्री अजय चतुर्वेदी, गुड़गांव 1100/-88. गुप्तदान -4,50,000
89 ज्योति चतुर्वेदी,अटलांटा(u.s a) -12000/-
90. मनोज जी,सागर -2200/-

कुल प्राप्त सहयोग राशि योग : Rs.16,76,800/-

इस पुण्य कार्य में सहयोग के लिए सादर आग्रह है। सभी से बांधव तथा बहनों से करबद्ध निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में खुले हृदय से सहयोग देने की कृपा करे ।

सहयोग राशि भेजने के लिए :-महासभा खाता विवरणः

Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha
Saving A/C no.1006238340
ifs code- cbin0283533
Central bank of india
Branch- Anand vihar delhi

राशि स्थानातंरण के बाद उस राशि की सूचना निम्न नंबर पर अपने दूरभाष तथा email के साथ भेजने की कृपा करें ।

निवेदक : शशांक चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
9826086879

बसंत के विभिन्न रूप तथा महत्व

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

हमारी भारतीय संस्कृति उत्सव प्रिया तथा उल्लासमयी है। साधारणता ऋतु परिवर्तन हमारी संस्कृति में साधारणतया ऋतु परिवर्तन के समय कोई ना कोई उत्सव तथा त्यौहार मनाये जाते हैं। बसंत पंचमी शीत ऋतु तथा ग्रीष्म ऋतु के सन्धिकाल में होती है । मौसम सुहाना होता है। इस दिन विशेषकर माँ सरस्वती का पूजन किया जाता है। सरस्वती के पूजन का प्रमुख कारण उनका यह प्राकटय दिवस है। सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने जब सृष्टि की रचना की तथा उसके उपरांत भ्रमण किया। सृष्टि पूर्णता शांत थी। चारों तरफ नीरवता फैली हुई थी। ब्रह्मा जी को यह पसंद नहीं आया उन्होंने भगवान विष्णु के समक्ष यह समस्या रखी । निवारण के लिए विष्णु जी ने माँ आदिशक्ति दुर्गा माता का आह्वान किया , माँ तुरन्त प्रकट हुई तब विष्णु जी ने यह समस्या उनके सामने रखी। माँ आदि शक्ति के शरीर से श्वेत रंग का भारी तेज उत्पन्न हुआ जो तुरंत नारी के रूप में परिवर्तित हो गया। यह चतुर्भुज रूप था। जैसे ही वीणा ने नाद किया। जीव जंतुओं में वाणी तथा प्रकृति में कोलाहल उत्पन्न हुआ। बसंत लोगों का मनचाहा मौसम है फूलों पर बहार खेतों में पीली सरसों के फूल, गेहूं की बालियां खिलने लगती हैं। आम पर बोर आने लगता है। फूलों के ऊपर भौरे तथा तितलियाँ गुंजन करते हैं। इस दिन विष्णु तथा कामदेव की पूजा भी होती है। सुहावना मौसम में लोग पूरी तरह से प्रसन्न होकर प्रकृती के साथ।तादम्य स्थापित करने के लिए पीले वस्त्र पहन कर उल्लासित होते हैं। आकाश पतंग से भर जाता है इस दिन पतंग बाजी की प्रतियोगिताएं भी होती है। विद्या की देवी माँ सरस्वती का पूजन विद्यालयों में होता है तथा शिशुओं को विद्या अध्ययन प्रारंभ भी कराया जाता है। बसंत पंचमी समस्त भारत में मनाया जाता है।

यह बसंत है

महक रही कली कली,
खुशियां है गली गली।
हर तरफ सुवास है,
फूल उठी सरसों,खेतों में हरियाली का वास है।
पपीहे की तेर है,कोयल का गान है,
आम पर बौर,फूलों पर तितलियां
गाते मधुप गान है,
हर तरफ उल्लास ही उल्लास है।
खिले खिले फूल है,मन में उमंग है,
एक नई तरंग है।
ये पतझड़ का अंत है,खुशियां अनंत है।
यह बसंत है,यह बसंत है।।

** **प्रीति चतुर्वेदी,** आगरा

बसंत ऋतु

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

पीतांबर को धारण कर
देखो बसंत आया है
कोहरे से आच्छादित
शीत से ठिठुर रही धरती
पर भी यौवन आया है
पीतांबर को धारण कर
देखो बसंत आया है
माँ वाणी की वीणा से
झंकृत हुई धरणी है
माँ वीणा वादनी तलक
बसन्ती ओज आया है
पीतांबर को धारण कर
देखो बसंत आया है
धानी लहंगा पीत चुनर
रमणी पर२बसन्त छाया
सुरभि और खिलती कलियाँ से
निरखी भू कीं काया
पीतांबर को धारण कर
देखो बसंत आया है

जय सियाराम

- संजय मिश्रा, कानपुर

शबरी को आश्रम सौंपकर महर्षि मतंग जब देवलोक जाने लगे, तब शबरी भी साथ जाने की जिद करने लगी। शबरी की उम्र दस वर्ष थी। वो महर्षि मतंग का हाथ पकड़ रोने लगी।

महर्षि शबरी को रोते देख व्याकुल हो उठे। शबरी को समझाया पुत्री इस आश्रम में भगवान आएंगे, तुम यहीं प्रतीक्षा करो। अबोध शबरी इतना अवश्य जानती थी कि गुरु का वाक्य सत्य होकर रहेगा, उसने फिर पूछा- कब आएंगे..?

महर्षि मतंग त्रिकालदर्शी थे। वे भूत भविष्य सब जानते थे, वे ब्रह्मर्षि थे। महर्षि शबरी के आगे घुटनों के बल बैठ गए और शबरी को नमन किया। आसपास उपस्थित सभी ऋषिगण असमंजस में डूब गए।ये उलट कैसे हुआ। गुरु यहां शिष्य को नमन करे, ये कैसे हुआ???

महर्षि के तेज के आगे कोई बोल न सका।

महर्षि मतंग बोले-

पुत्री अभी उनका जन्म नहीं हुआ।

अभी दशरथ जी का लग्न भी नहीं हुआ।

उनका कौशल्या से विवाह होगा।फिर भगवान की लम्बी प्रतीक्षा होगी। फिर दशरथ जी का विवाह सुमित्रा से होगा।फिर प्रतीक्षा.. फिर उनका विवाह कैकई से होगा। फिर प्रतीक्षा..

फिर वो जन्म लेंगे, फिर उनका विवाह माता जानकी से होगा। फिर उन्हें 14 वर्ष वनवास होगा और फिर वनवास के आखिरी वर्ष माता जानकी का हरण होगा। तब उनकी खोज में वे यहां आएंगे।तुम उन्हें कहना आप सुग्रीव से मित्रता कीजिये। उसे आततायी बाली के संताप से मुक्त कीजिये, आपका अभीष्ट सिद्ध होगा। और आप रावण पर अवश्य विजय प्राप्त करेंगे।

शबरी एक क्षण किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई। अबोध शबरी इतनी लंबी प्रतीक्षा के समय को माप भी नहीं पाई।

वह फिर अधीर होकर पूछने लगी- इतनी लम्बी प्रतीक्षा कैसे पूरी होगी गुरुदेव???

महर्षि मतंग बोले- वे ईश्वर है, अवश्य ही आएंगे। यह भावी निश्चित है। लेकिन यदि उनकी इच्छा हुई तो काल दर्शन के इस विज्ञान को परे रखकर वे कभी भी आ सकते है। लेकिन आएंगे अवश्य...! जन्म मरण से परे उन्हें जब जरूरत हुई तो प्रह्लाद के लिए खम्बे से भी निकल आये थे। इसलिए प्रतीक्षा करना। वे कभी भी आ सकते है। तीनों काल तुम्हारे गुरु के रूप में मुझे याद रखेंगे। शायद यही मेरे तप का फल है।

शबरी गुरु के आदेश को मान वहीं आश्रम में रुक गई। उसे हर दिन प्रभु श्रीराम की प्रतीक्षा रहती थी।वह जानती थी समय का चक्र उनकी उंगली पर नाचता है, वे कभी भी आ सकतें है।

हर रोज रास्ते में फूल बिछाती है और हर क्षण प्रतीक्षा करती।

कभी भी आ सकतें हैं। हर तरफ फूल बिछाकर हर क्षण प्रतीक्षा। शबरी बूढ़ी हो गई।लेकिन प्रतीक्षा उसी अबोध चित्त से करती रही। और एक दिन उसके बिछाए फूलों पर प्रभु श्रीराम के चरण पड़े। शबरी का कंठ अवरुद्ध हो गया। आंखों से अश्रुओं की धारा फूट पड़ी। गुरु का कथन सत्य हुआ।भगवान उसके घर आ गए। शबरी की प्रतीक्षा का फल ये रहा कि जिन राम को कभी तीनों माताओं ने जूठा नहीं खिलाया, उन्हीं राम ने शबरी का जूठा खाया। ऐसे पतित पावन मर्यादा, पुरुषोत्तम, दीन हितकारी श्री राम जी की जय हो। जय हो। जय हो। एकटक देर तक उस सुपुरुष को निहारते रहने के बाद वृद्धा भीलनी के मुंह से स्वर/बोल फूटे- कहो राम ! शबरी की कुटिया को ढूंढ़ने में अधिक कष्ट तो नहीं हुआ..? राम मुस्कुराए- यहां तो आना ही था मां, कष्ट का क्या मोल/मूल्य..?

जानते हो राम! तुम्हारी प्रतीक्षा तब से कर रही हूँ, जब तुम जन्मे भी नहीं थे, यह भी नहीं जानती थी कि तुम कौन हो ? कैसे दिखते हो ? क्यों आओगे मेरे पास ? बस इतना ज्ञात था कि कोई पुरुषोत्तम आएगा, जो मेरी प्रतीक्षा का अंत करेगा।

राम ने कहा- तभी तो मेरे जन्म के पूर्व ही तय हो चुका था कि राम को शबरी के आश्रम में जाना है।" एक बात बताऊँ प्रभु ! भक्ति में दो प्रकार की शरणागति होती है। पहली 'वानरी भाव' और दूसरी 'मार्जारी भाव'। "बन्दर का बच्चा अपनी पूरी शक्ति लगाकर अपनी माँ का पेट पकड़े रहता है, ताकि गिरे न... उसे सबसे अधिक भरोसा माँ पर ही होता है और वह उसे पूरी शक्ति से पकड़े रहता है। यही भक्ति का भी एक भाव है, जिसमें भक्त अपने ईश्वर को पूरी शक्ति से पकड़े रहता है। दिन रात उसकी आराधना करता है...!" (वानरी भाव) पर मैंने यह भाव नहीं अपनाया। "मैं तो उस बिल्ली के बच्चे की भाँति थी, जो अपनी माँ को पकड़ता ही नहीं, बल्कि निश्चिन्त बैठा रहता है कि माँ है न, वह स्वयं ही मेरी रक्षा करेगी, और माँ सचमुच उसे अपने मुँह में टांग कर घूमती है। मैं भी निश्चिन्त थी कि तुम आओगे ही, तुम्हें क्या पकड़ना...। (मार्जारी भाव)

राम मुस्कुराकर रह गए!!

!! हंस और काग !!

- कनक चतुर्वेदी, कोलकाता

पुराने जमाने में एक शहर में दो ब्राह्मण पुत्र रहते थे, एक गरीब था तो दूसरा अमीर। दोनों पड़ोसी थे। गरीब ब्राह्मण की पत्नी उसे रोज़ ताने देती झगड़ती।

एक दिन एकादशी के दिन गरीब ब्राह्मण पुत्र झगड़ों से तंग आ जंगल की ओर चल पड़ता है ये सोच कर कि जंगल में शेर या कोई मांसाहारी जीव उसे मार कर खा जायेगा, उस जीव का पेट भर जायेगा और मरने से वो रोज की झिक झिक से मुक्त हो जायेगा।

जंगल में जाते उसे एक गुफ़ा नज़र आती है। वो गुफ़ा की तरफ़ जाता है। गुफ़ा में एक शेर सोया होता है और शेर की नींद में ख़लल न पड़े इसके लिये हंस का पहरा होता है। हंस ज़ब दूर से ब्राह्मण पुत्र को आता देखता है तो चिंता में पड़ सोचता है... ये ब्राह्मण आयेगा शेर जगेगा और इसे मार कर खा जायेगा... एकादशी के दिन मुझे पाप लगेगा... इसे बचायें कैसे?

उसे उपाय सुझता है और वो शेर के भाग्य की तारीफ़ करते कहता है। ओ जंगल के राजा... उठो, जागो आज आपके भाग्य खुले हैं, ग्यारस के दिन खुद विप्रदेव आपके घर पधारे हैं, जल्दी उठें और इन्हें दक्षिणा दें रवाना करें... आपका मोक्ष हो जायेगा... ये दिन दुबारा आपकी जिंदगी में शायद ही आये, आपको पशु योनि से छुटकारा मिल जायेगा।

शेर दहाड़ कर उठता है, हंस की बात उसे सही लगती है और पूर्व में शिकार हुए मनुष्यों के गहने थे, वे सब के सब उस ब्राह्मण के पैरों में रख, शीश नवाता है, जीभ से उनके पैर चाटता है। हंस ब्राह्मण को इशारा करता है, विप्रदेव ये सब गहने उठाओ और जितना जल्द हो सके वापस अपने घर जाओ... ये सिंह है.. कब मन बदल जाय! ब्राह्मण बात समझता है, घर लौट जाता है। पडोसी अमीर ब्राह्मण की पत्नी को जब सब पता चलता है तो वो भी अपने पति को जबरदस्ती अगली एकादशी को जंगल में उसी शेर की गुफा की ओर भेजती है। अब शेर का पहेरादार बदल जाता है। नया पहरेदार होता है ₹₹कौवा₹₹

जैसे कौवे की प्रवृति होती है वो सोचता है... बढीया है। ब्राह्मण आया.. शेर को जगाऊं.. शेर की नींद में ख़लल पड़ेगी, गुस्साएगा, ब्राह्मण को मारेगा तो कुछ मेरे भी हाथ लगेगा, मेरा पेट भर जायेगा।

ये सोच वो कांव.. कांव.. कांव.. चिल्लाता है। शेर गुस्सा हो जगता है। दूसरे ब्राह्मण पर उसकी नज़र पड़ती है, उसे हंस की बात याद आ जाती है.. वो समझ जाता है कौवा क्यूं कांव.. कांव कर रहा है ??

वो अपने पूर्व में हंस के कहने पर किये गये धर्म को खत्म नहीं करना चाहता.. पर फिर भी नहीं शेर, शेर होता है जंगल का राजा...!! वो दहाड़ कर ब्राह्मण को कहता है.. ₹हंस उड़ सरवर गये और अब काग भये प्रधान₹... थे तो विप्रा थांरे घरे जाओ... मैं किनाइनी जिजमान₹ !!

अर्थात हंस जो अच्छी सोच वाले अच्छी मनोवृत्ति वाले थे उड़ के सरोवर यानि तालाब को चले गये हैं और अब कौवा प्रधान पहरेदार है जो मुझे तुम्हें मारने के लिये, उकसा रहा है। मेरी बुद्धि घूमें उससे पहले ही.. हे ब्राह्मण, यहां से चले जाओ.. शेर किसी का जजमान नहीं हुआ है.. वो तो हंस था जिसने मुझ शेर से भी पुण्य करवा दिया।

दूसरा ब्राह्मण सारी बात समझ जाता है और डर के मारे तुरंत प्राण बचाकर अपने घर की ओर भाग जाता है..!! कोई किसी का दुःख देख दुःखी होता है और उसका भला सोचता है...वो हंस है और जो किसी को दुःखी देखना चाहता है,किसी का सुख जिसे सहन नहीं होता...वो कौवा है ।।

कौन है वह जो हमारी प्रगति में रुकावट उत्पन्न कर सकता है?

- शलभ चतुर्वेदी, होलीपुरा

श्रद्धांजली : एक दिन जब ऑफिस के सभी कर्मचारी ऑफिस पहुँचे, तो उन्हें दरवाजे पर एक पर्ची चिपकी हुई मिली। उस पर लिखा था– "कल उस इंसान की मौत हो गई, जो कंपनी में आपकी प्रगति में बाधक था। उसे श्रद्धांजली देने के लिए सेमिनार हाल में एक सभा आयोजित की गई है। ठीक ११ बजे श्रद्धांजली सभा में सबका उपस्थित होना अपेक्षित है।"

अपने एक सहकर्मी की मौत की खबर पढ़कर पहले तो सभी दुःखी हुए। लेकिन कुछ देर बाद उन सब में ये जिज्ञासा उत्पन्न होने लगी कि आखिर वह कौन था, जो उनकी और कंपनी की प्रगति में बाधक था? ११ बजे सेमिनार हाल में कर्मचारियों का आना प्रारंभ हो गया। धीरे–धीरे वहाँ इतनी भीड़ जमा हो गई कि उसे नियंत्रित करने के लिए सिक्यूरिटी गार्ड की व्यवस्था करनी पड़ी। लोगों का आना लगातार जारी था। जैसे–जैसे लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही थी, सेमिनार हॉल में हलचल भी बढ़ती जा रही थी। सबके दिमाग में बस यही चल रहा था– "आखिर वह कौन था, जो कंपनी में मेरी प्रगति पर लगाम लगाने पर तुला हुआ था? चलो, एक तरह से ये अच्छा ही हुआ कि वह मर गया।"

जैसे ही श्रद्धांजली सभा प्रारंभ हुई, एक–एक करके सभी उत्सुक और जिज्ञासु कर्मचारी कफ़न के पास जाने लगे। करीब पहुँचकर जैसे ही वह कफ़न के अंदर झाँकते, उनका चेहरा फीका पड़ जाता। मानो उन्हें सदमा सा लग गया हो।

उस कफ़न के अंदर एक दर्पण रखा हुआ था। जो भी उसमें झाँककर देखता, उसे उसमें अपना ही अक्स नज़र आता। उस दर्पण पर एक पर्ची भी चिपकी हुई थी, जिस पर कुछ ऐसा लिखा था, जो सबकी आत्मा को झकझोर रहा था– "केवल एक ही इंसान हमारी प्रगति में बाधक है और वह मैं खुद हूँ। हम ही वह इंसान है, जो अपने जीवन में क्रांति उत्पन्न कर सकते है। हम ही वह इंसान है, जो अपनी ख़ुशी, अपनी समझ और अपनी सफलता को प्रभावित कर सकते है। हम ही वह इंसान हैं, जो अपनी खुद की मदद कर सकते है। सबसे महत्वपूर्ण रिश्ता जो हमारा किसी के साथ है, वह खुद से है। हमारे विचार, कर्म और हमारी आदतें ही हमारी नियति का निर्माण करती है,तो फिर कोई और हमारी असफलता का कारण कैसे हो सकता है!!

टीम वर्क से सभी कुछ संभव है

- मनीष, इटावा/लखनऊ

यह सूक्ति वाक्य बचपन से 55 वर्ष की उम्र तक सुनते आ रहे है और अनेकों बार इसके क्रियान्वयन पर सफलता प्राप्त होती रही है...यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है। दिनांक 22 दिसंबर को ग्वालियर में संपन्न अखिल भारतीय श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के द्वितीय कार्यकारिणी समागम में इसका पुनः अनुभव किया। हम चौबे चार(आदरणीय विपिन दादा जहांगीरपुर/ संजय भाई होलीपुरा/यदुवेश (मिंटू) पुरा लखनऊ से कार द्वारा 21 दिसंबर को ही सांयकाल होटल सुख सागर ग्वालियर पहुंच गए, ग्वालियर समाज के बंधुओं के गर्म जोशी से स्वागत से रास्ते की 350 किमी से अधिक की थकान चंद पलो में ही गायब हो गई। रात्रि में 12 बजे भी गर्म चाय की व्यवस्था आयोजकों द्वारा की गई थी...अधिकांश बांधवो ने ग्वालियर के प्रख्यात भैरंट दूध का सेवन किया और अपने अपने कमरों में रात्रि विश्राम लिया। सुबह 6 बजे से ही प्रत्येक कमरे में गर्म चाय पहुंच गई,9.30 बजे तक समाज के अधिकांश बांधवों का अति प्रिय नाश्ता तैयार था जिसमें बेढ़ई के साथ जलेबी, इमरती, पोहा,वेज सैंडविज को उदरस्थ करने के बाद महासभा कार्यकारिणी समागम का प्रारंभ कुलदेवी महाविद्या व चर्चिका के चित्रों पर दीप प्रज्वलन के साथ हुआ...। प्रोफेसर नागेंद्र जी चंद्रपुर/ ग्वालियर के सारगर्भित स्वागत भाषण से ग्वालियर और समाज का जुड़ाव भी महसूस हुआ। आदरणीय सभापति महोदया के द्वारा राष्ट्रीय युवा सम्मेलन किए जाने हेतु सभी सदस्यों से उनके विचार मांगे गए जिसमें सदस्यों द्वारा अपने विचारों के आदान प्रदान के उपरांत..ग्वालियर समाज के वरिष्ठ समझ सेवियों के साथ ही समाज के जाने माने चिकित्सक डॉक्टर अपूर्व जी फिरोजाबाद का सम्मान भी किया गया। इसके उपरांत भोजन की घोषणा के होते ही सभी चल पड़े और अत्यंत सुस्वाद भोजन के बाद दूरस्थ स्थानों से पधारे बांधवों के लिए पैडे के डिब्बे के साथ करुणेश भाई होटल के दरवाजे पर पाए गए। इस तरह द्वितीय कार्यकारिणी समागम संपन्न हुआ। इस सफल आयोजन के लिए ग्वालियर सभा के अध्यक्ष भाई अजय तिवारी जी,अभिषेक गप्पू, श्री राकेश जी (टिल्लू) व समस्त टीम का हार्दिक आभार

आध्यात्मिक उत्सव -महाकुंभ

- सुचित्रा एवं शुभांग, लखनऊ

अब तीरथपति देखि सुहावा। सुख सागर रघुबर सुखु पावा।।
को कहि सकइ प्रयाग प्रभाउ। कलुष पुंज कुंजर मृगराउ।।

जैसे समुद्र में मिलने के लिए नदियां आतुर होती हैं उसी प्रकार गंगा, जमुना व अदृश्य सरस्वती के त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाने को आतुर जनसैलाब उमड़ा देखकर गोस्वामी तुलसीदास रचित चौपाई साकार हो उठी।चार हजार हेक्टेयर में फैले अस्थाई निर्मित महाकुंभ जिला, जिसके लिए गुगल नेवीगेशन सेटेलाइट को कुंभ क्षेत्र का नया मैप भी जारी करना पड़ा है। महाकुंभ की सुरक्षा व्यवस्था में एक ए.डी. जी. स्तर के सीनियर पुलिस अधिकारी के नेतृत्व में लगभग 50 हजार राज्य एवं केंद्रीय सुरक्षा बल तैनात किए गए हैं, स्वास्थ्य की देखभाल के लिए एक सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल के साथ ही 25 सेक्टर बंटे महाकुंभ क्षेत्र में कई स्वास्थ्य केंद्र भी बनाए हैं, इसके साथ ही सीवर, स्वच्छता तथा रोजमर्रा सामग्री, अलाव, ठहराव एवं यातायात व्यवस्था आधुनिक डिजिटल आधार पर की गई है।आधुनिक डिजिटल कैंप भी बनाया गया है ,जहां विस्तार से महाकुंभ के इतिहास तथा अन्य आवश्यक जानकारी चैटबोर्ड द्वारा दस भाषाओं में उपलब्ध कराई गई है। लगभग 24 खोया पाया केंद्र भी बनाए गए हैं।

शाम का धुंधलका बढ़ रहा था, कृत्रिम प्रकाश में जहां तक जिधर भी नजर पहुंच पाई, वहां तक आस्था, भक्ति, विश्वास शक्ति से भरपूर जनसैलाब उमड़ा हुआ लगता है।

पौष पूर्णिमा के पहले स्नान के साथ ही कल्पवास भी शुरू हो गया,माना जाता है कि संगम तट पर माघ मास में कल्पवास करने से सौ वर्षों तक तपस्या करने के समान पुण्य की प्राप्ति होती है । विधि विधान के अनुसार लगभग 12 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने केला, तुलसी और जौं रोपकर महाब्रत और संयम का संकल्प से कल्पवास की शुरुआत हुई।

अंधेरा होते ही रेत पर जब लाखों खंभों पर की खड़ी परछाई से गंगा पर बनता अक्स देख कर सारा इलाका आसमां में बनी हजारों आकाशगंगा सा नजारा लगता है।इस दृश्य को आत्मसात करके ही अनुभव किया जा सकता है, इस अभूतपूर्व दृश्य का वर्णन शब्दों से परे है।

महाकुंभ की प्राचीनता एवं विशालता का कोई ओर छोर नहीं मिलता है, चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने यात्रा वृतांत में लिखा है कि छठी शताब्दी में सम्राट हर्षवर्धन कुंभ के आयोजन में शामिल होते थे, जहां धन, वस्त्र सम्पदा सहित सबकुछ दान कर देते थे। मुगलकालीन सन् 1665 में गजट ?खुलासातु –त–तारीख? में भी कुंभ का विवरण मिलता है। द इंपीरियल गजट आफ इंडिया के अनुसार 1882 के कुंभ मेले में 'दस लाख' लोगों ने हिस्सा लिया था।इसी गजट में तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व ग्रीक यात्री मेगस्थनीज की प्रयागराज कुंभ यात्रा का वर्णन भी है। आधुनिक डिजिटल महाकुंभ को लगभग 183 देशों में सर्च किया गया है, वर्तमान महाकुंभ में लगभग 93 देशों से सनातन धर्म के उपासक एवं प्रेमी प्रयागराज पहुंच चुके हैं। 21देशो में रहने वाले हिन्दू एक समूह

बनाकर अपने पूर्वजों के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए महाकुंभ स्नान के साथ ही अयोध्या, काशी व अन्य स्थानों पर भी जाने को सोचते हैं।

जापान से पहली 80 वर्षीय विदेशी महिला महामंडलेश्वर योगमाता कीको ऐकावा भी प्रयागराज पहुंच गई है,जो 1984 में पायलट बाबा के सानिध्य में साध्वी बनी उन्हें योगविद्या में भी महारत हासिल है,वह जापान में कई योग सेंटर संचालित करती है, आपको 2016 में योगदिवस पर संयुक्त राष्ट्र में संबोधन करने का सम्मान भी दिया गया।उनकी टीम द्वारा ₹स्वास्तिवाचन₹ सुनने का अनुभव सनातन संस्कृति का गौरव बढ़ा रहा था।रुस, इटली, फ्रांस, इंग्लैंड से कई लोग सपरिवार महा कुंभ में पधारे हैं। प्रसिद्ध भारतीय उद्योगपति, फिल्म सितारे, राजनीतिक नेता भी महाकुंभ पहुंच सकते हैं,इसी अवधारणा पर हाईटेक टेंट सिटी बसाई गई है, जहां एक दिन का किराया 10-90 हजार रुपए तक है।

अखाड़ों के शिविर अपने आप में एक शहर जैसे ही लगते हैं, जहां हर सुविधा उपलब्ध है, अन्न क्षेत्र, प्रवचन क्षेत्र,तप स्थल, आगुंतकों के ठहरने के साथ ही आवश्यक दुकानें भी है। सनातन धर्म के ध्वजवाहक अखाड़ों में धर्म, शस्त्र से लेकर शास्त्रार्थ, कुश्ती के साथ ही कजरी या बिरहा सिखाने की व्यवस्था अपने आप में अद्भुत है,इनकी भाषा, शब्द, नियम,सजा और पांबदियां दुनिया से अलग होती हैं। नियम विरुद्ध होने पर सजा अनिवार्य होती हैं। इन शिविरों में हजारों देशी -विदेशी नागा साधु एवं संतों ने अपना डेरा डाल रखा है। काफी सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठनों ने भी अपने शिविर लगाकर लोगों को मुफ्त आवास तथा भोजन की व्यवस्था कर रखी है। रात्रि की शुरुआत के साथ ही अखाड़ों के लाउडस्पीकर पर भजनों की धुन बज रहीं हैं तो किसी शिविर में कथा वांची जा रही है, कहीं कोई अर्जुन की कथा सुना रहा है तो कहीं गीता सार पर चर्चा हो रही है, कहीं रासलीला तो कहीं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। ऐसा लगता है यहां जीवन 24x7 चलता जाता है। भोर होते ही सभी स्नान करने के लिए दोड़ने लगे, चारों तरफ पीपा पुल हो या आम सड़क पर सुबह से शाम तक लाखों लोग भागते हुए ही लगते हैं । शिविर हो अन्न क्षेत्र या यातायात रमते अनुशासित जनसैलाब को देखकर लगता है कि भगवान ही सबको संचालित कर रहे हैं।पौष पूर्णिमा पर 1.5 करोड़ तथा मकर संक्रांति पर 3.5 करोड़ लोगों कै मिला कर एक सप्ताह में ही लगभग 15 करोड़ से अधिक लोगों ने त्रिवेणी संगम पर पवित्र स्नान कर लिया है। कुंभ मेले में हर समय एक करोड़ से ज्यादा लोगों की उपस्थिति बनी रहती है। महाकुंभ के सबसे प्रमुख स्नान 29 जनवरी मौनी अमावस्या को 12 करोड़ों से अधिक लोगों को पहुंचने की संभावना है। कल्पवासियों को छोड़कर अन्य सभी एक दो दिन बाद ही पुण्य लाभ अर्जित कर अयोध्या श्री राम, काशी विश्वनाथ दर्शन को प्रस्थान करते हैं।

काशी विद्यापीठ से पी एच डी करने वाले पंचदशनामी जूना अखाड़े के योगानंद गिरि जी कहते हैं ---

नर सेवा, नारायण सेवा, सेवा का यही मार्ग संन्यास है। उन्होंने कहा कि संन्यास तो परमात्मा तक पहुंचाने का माध्यम है, आगे कहा कि साधु है तो सनातन है, साधु नहीं रहेंगे तो धर्म भी नहीं रहेंगा। अखाड़ों में बीटेक,सीए, आईएएस एवं समाज के अन्य प्रतिष्ठित लोग संन्यासी बनने आते हैं। ये लोग बेहतर समाज बनाने में योगदान भी करते हैं।

दरअसल महाकुंभ एक अध्यात्मिक सांस्कृतिक विश्वास की यात्रा है, जिसमें विरासत एवं विकास की भक्ति के रंग घुले हुए हैं।

मान्यता है कि -----

₹प्रयाग शब्द की व्युत्पत्ति यज्ञ धातु से हुई है, महाभारत के वन पर्व के अनुसार इस तीर्थ का नाम प्रयाग इसलिए पड़ा है कि यहां स्वयं ब्रह्मा ने प्रकृष्ट (उत्कृष्ट) यज्ञ संपन्न किया था, तभी से प्रयाग की पवित्र भूमि पर कुंभ पर संगम स्नान करने लाखों लोग बिना किसी निमंत्रण के जुटते रहें हैं। कुंभ मेले में लोगों का ही संगम नहीं होता बल्कि भारतीय भाषाओं एवं लोक संस्कृतियों का भी संगम होता है।

हमारा विश्वास है कि 144 वर्षों बाद अद्भुत संजोग के महाकुंभ में पवित्र स्नान करने आप सभी पहुंचेंगे। अमेरिकी लेखक मार्क ट्वैन ने अपनी किताब में फालोइंग द इक्वेटर,अ जर्नी अराउंड द वर्ल्ड (1897) में महाकुंभ का वर्णन करते हुए लिखा है कि.... प्रयाग तीर्थ पहुंच कर लोग अंत्यंत ही उत्साहित एवं संतुष्ट दिखे..... जैसे गंगा जल का स्पर्श ही मृत एवं रोगग्रस्त शरीर को जिलाने के लिए पर्याप्त है।

हर हर गंगे

मेरे गुरु - मेरे चाचा

श्री उमेश चंद चतुर्वेदी, मध्य प्रदेश के तात्कालिक
मुख्यमंत्री प्रकाश चंद सेठी द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए

आकाश जैसा विशाल और निर्मल हृदय जिस में सब के सुख की कामना हो, सागर की गहराई जैसा हर परिस्थितिका जीवटता से सामना करने वाला संबल, मज़बूत और क़द्दावर क़द काठी, स्नेही स्वभाव- ऐसे थे मेरे पिताजी ! मेरे पिताजी श्री उमेशचन्द्र चतुर्वेदी तरसोखर के स्वर्गीय श्री देवकृष्ण चतुर्वेदी और स्वर्गीय श्रीमती चंद्रा चतुर्वेदी की सबसे छोटी सन्तान थे। चार बड़े भाइयों के बच्चों द्वारा प्रयुक्त संबोधन 'चाचा' हम बच्चों ने भी अपना लिया और पिताजी को चाचा कहने लगे। आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी चाचा वॉलीबॉल के राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी और मँझे हुए तैराक थे। शरीर को चुस्त रखने पर बहुत बल देते थे और अपनी fitness के कारण अन्य पुलिस अधिकारियों के लिए उदाहरण थे। वे कहा करते थे

किस्वस्थ जीवनशैली के लिए व्यायाम, पौष्टिक आहार के साथ चिंतन और मनन के लिए समय अवश्य रखना चाहिये जिससे नई ऊर्जाऔर बाधाओं को पार करने की क्षमता मिलती है। उनके व्यक्तित्व से मेल खाती उनकी बुलंद आवाज़थी जिस के कारण वे परेड के नेतृत्व के लिए चुने जाते थे। चाचा अपने मधुर स्वर और मीठे गायन के लिए भी जाने जाते थे। बेहद कर्मठ, अनुशासन प्रिय, रौबीले और दमदार पुलिस अधिकारी होने के साथ साथ वे अत्यंत स्नेहिल और ज़िंदादिल थे। अपने चुंबकीय व्यक्तित्व के कारण वे किसी भी सभा का मुख्य आकर्षण बन जाते थे। अपने पराये के भेद से परे सभी को स्नेह देते थे। अपने चतुर्वेदी समाज से वे हमेशा जुड़े रहे। जहाँ भी उनका स्थानांतरण हुआ, उस नगर के चतुर्वेदी परिवारों से परिचय करके नियमित सभा और पिकनिक का आयोजन करवाते रहे।

उज्जैन के कुंभ मेले सिंहस्थ मेले में तैनात उमेश जी

सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय का ध्येय लेकर वे पुलिस विभाग में सेवारत हुए। उनकी कर्तव्य परायणता के कारण न केवल उन्हें इंदौर, उज्जैन और भोपाल जैसे बड़े शहरों में महत्वपूर्णज़िम्मेदारियाँ दी गईं अपितु दो बार सिंहस्थ के आयोजन का दायित्व भी दिया गया, जिसे उन्होंने बखूबी पूरा किया। सेवानिवृतिके बाद भी वे सिंहस्थ आयोजन की परामर्शसमितिके सक्रिय सदस्य रहे।

बहुधा चाचा को सबसे कठिन और संवेदनशील क्षेत्रों को सँभालने की ज़िम्मेदारी दी जाती थी। अस्सी और नब्बे के दशकों में चाचा का कार्यक्षेत्र उज्जैन और इंदौर में रहा। इन दशकों में हुए दंगों से इंदौर और उज्जैन भी अछूते नहीं थे।कई अवसरों पर चाचा कई दिनों तक अपने दल के साथ दंगा ग्रस्त क्षेत्र में दिन रात बिना विश्राम किए अपनी duty पर बने रहे। दंगों के दौरान दो अवसर ऐसे आये जब उन पर जानलेवा हमले हुए परंतु अपनी वीरता और सूझबूझ से चाचा ने स्वयं को और अपने दल को सुरक्षित रखा और दंगाइयों को नियंत्रित किया। चाचा की अद्भुद नेतृत्व क्षमता और वीरता बहुत प्रेरणादायी है।

चाचा के कई मित्र आरएसएस में थे। इस कारण आपातकाल के समय सरकार ने चाचा को कई ऐसे आदेश दिये जो उन के सिद्धांतों के विरुद्ध थे। चाचा किसी दबाव में नहीं आये। फलस्वरूप उन्हें बहुत परेशान किया गया और दंड के बतौर निलंबित तक कर दिया गया। आपातकाल समाप्त होने के पश्चात निष्पक्ष जाँच हुई और चाचा का निलंबन रद्द किया गया। सत्यमेव जयते नानृतम! सबसे बड़ी बात यह है किइस पूरी अवधिमें चाचा ने हम बच्चों को कोई कमी नहीं होने दी और यह अनुभूतिभी नहीं होने दी किवे किस विषम परिस्थितिका सामना कर रहे थे।

चाचा शुद्ध अंतःकरण वाले और मानवतावादी थे – वे अनेकों का संबल बने, कइयों को स्वाभिमान से जीवन जीने में सहायता की, कइयों को पुलिस में नौकरी करने के लिए प्रेरित

किया और उन्हें आजीविका का साधन दिया। चाचा की जीवन संगिनी, हमारी माँ, चाचा के हर निर्णय में उनके साथ थीं। माँ ने परोपकार में भी चाचा का हमेशा साथ दिया। माँ और चाचा ने हर धर्मऔर जातिके लोगों की यथोचित सहायता की।

भारतीय सनातन संस्कृतिमें दृढ़विश्वास वाले चाचा वेदान्त और रामचरितमानस के ज्ञानी थे। इन विषयों पर मेरे ही नहीं अनेक लोगों के गुरु थे। इन गूढ़विषयों को वे बड़े ही सरल शब्दों में समझा देते थे। संकुचित विचारधाराओं और कुरीतिओं को वे सदैव दूर करने का प्रयास करते रहे। जब माँ चाचा का विवाह हुआ उन दिनों उत्तर भारत में महिलाओं में पिछौरे का चलन था। चाचा ने माँ का पिछौरा बन्द कराया। अपनी शालीनता को बनाये रखते हुये महिलाएं सदियों से नेतृत्व करती रही हैं, यह चाचा सदैव कहते थे। मैं अपने हाई स्कूल में गणित विषय में पढ़ने वाली अकेली लड़की थी और

प्रारंभ में इस कारण विद्यालय जाने से डर रही थी। चाचा ने मेरी हिम्मत बढ़ाई और मुझे निडर हो कर अपने मनपसंद विषय को पढ़ने के लिए प्रेरित किया। मैंने अपने मनपसंद विषय गणित से हाईस्कूल किया। उसके बाद इंजीनियरिंग में प्रवेश किया और मुझे तरसोखर की पहली महिला इंजीनियर बनने का सौभाग्य मिला। सेवानिवृत्तिके बाद चाचा सफलता पूर्वक बिज़नेस करते रहे। कर्मयोग पर उन्हें दृढ़विश्वास था और वे बड़े ही उद्यमी थे। साथ ही 'सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम्' में विश्वास करने वाले चाचा हर कर्मफल को संतोष से स्वीकार करते थे ! वे मेरे जनक, गुरु, मार्गदर्शक और मेरे जीवन की प्रेरणा तथा ऊर्जादेने वाले स्तंभ थे। मेरी असफलताओं और विपरीत परिस्थितियों में वे मेरा सबसे बड़ा सहारा थे । साथ ही सफलताओं में अहंकार से बचने और विश्राम करने की सीख भी वही देते थे। 1 फरवरी, 2024 के दिन सूर्योदय के समय नींद में बड़ी शांतिके साथ वे इस संसार को छोड़गये। मैं कैसे स्वीकार करूँ कभी न भर पाने वाली इस रिक्तता को !

यही चाहते रहे सदैव,
मैं सदा संतोष से रहूँ ।।
देते रहे अपरिमित मुझको,
संभव नहीं मैं उऋण हो लूँ ।।
हर कदम पर थे साथ वे मेरे,
मेरे जीवन के थे बरगद,
धन्य हुआ ये जीवन मेरा
ये सुता रहेगी नतमस्तक।।

– श्रीमती ज्योति चतुर्वेदी
अटलांटा, यूएसए
(र. क्र. 3067)

स्व. श्री हृदय नाथ चतुर्वेदी

जन्म :- 29, जनवरी, 1935 माघ कृष्ण पक्ष द्वितीय
निर्वाण :- 06 दिसम्बर, 2024 माघ शुक्ल पक्ष पंचमी

स्व. श्री हृदय नाथ चतुर्वेदी
जन्म: 21.01.1935, देवलोक गमन: 06.12.2024

कभी कभी अतीत की यादो में विचरण करना मन की शान्ति को एक अनोखा सकून देता है आज मै उन्ही अतीत की यादो में विचरण कर रहा हूँ और उन पल को आप के साथ साझा कर रहा हूँ. क्योंकि कुछ पल जिन्दगी में ऐसे भी आते है जिन्हें भुलाया ही नही जा सकता रोज़ जिनसे सुबह बात होती थी आज उन्ही के बारे में अपनी कुछ यादे लिख रहा हू। उन्ही एक पलो में से आज के ये कुछ पल श्रधा के रूप में पूज्य दद्दा को अर्पित कर रहा हू। हमारे दद्दा स्व श्री हृदय नाथ जी भोपाल/होलीपुरा बीच का मोहल्ला (हवेली) स्व श्री नरसिंह दास जी के ज्येष्ठ पुत्र थे। आपका जन्म सन 1935 में कोलकाता में हुआ था पर आपका निवास स्थान होलीपुरा रहा। आप हाई स्कूल की परीक्षा पास करके कलकत्ता आ गए। 16 वर्ष की आयु में ही सन 1951 में हमारे पिताजी का निधन हो गया। आप इस सदमे को सहन सके और देख कर बेहोश हो गये और पाँच घंटे तक बेहोश रहे अतः अंतिम संस्कार भी न कर पाए। भगवान की कृपा से जिस दिन पिताजी का सूतक था उसी दिन आपका बैंक में इन्टरव्यू था। आप पाजामा और कुरता पहन के इन्टरव्यू देने गए। आप मन की दशा का अनुभव कर सकते है। आपका इन्टरव्यू बहुत अच्छा हुआ। और भगवान की कृपा से आपकी नौकरी बैंक ऑफ इंडिया में लग गई। आप दो बहनें और तीन भाई थे। पिताजी केवल बड़ी बहन की शादी कर पाए थे और सभी परिवार का भार आपके ऊपर आ गया। आपने सभी छोटे भाई बहन को पढाया लिखाया और योग्य बनाया। उस समय वेतन बहुत कम मिलता था। आप बड़ी लगन वो ईमानदारी से काम करते थे। इससे प्रसन्न हो कर इनके अधिकारी इनको ओवरटाइम दे दिया करते थे। जिससे आप अपना खर्चा निकालते थे और पूरी तनख्वाह होलीपुरा भेज दिया करते थे।

आपने १२ बी की परीक्षा होलीपुरा से प्राइवेट विद्यार्थी के रूप में की थी। परीक्षा देते समय जो कॉलेज के बड़े हाल में हो रही थी उसके छजे पर से एक बहुत बड़ा स्टूल आप के सिर पर आ गिरा काफी खून निकला, पूरे कपड़े व कापी खून से लाल हो गई, डाक्टर को बुला कर पट्टी बधवाई उसी हालत में भी आपने परीक्षा पूरी की और सेकंड डिवीज़न से उत्तीर्ण हुये। ये आपकी हिम्मत व साहस था। फिर आपने काम करते हुए नाइट कॉलेज ज्वाइन किया और कलकत्ता यूनिवर्सिटी से B com पास किया और आगरा से M.A. पास किया। उसके बाद आपका प्रमोशन अधिकारी पद पर हुआ। आप बैंक में एक कर्मठ और ईमानदार अधिकारी के रूप में जाने जाते थे। आपने विभिन्न स्थानों और पदों पर कार्य किया और ख्याति पाई। उनके प्रमुख उप अधिकारी क्षेत्र आगरा, लखनऊ, क्षेत्रीय अधिकारी कानपुर, उप आंचलिक प्रबंधक रांची व भोपाल प्रमुख है।

३० मई, १९५५ को आपकी शादी स्व श्री जग्गनाथ जी की जेष्ट पुत्रीश्रीमती स्व. उमा जी से हुई थी जिनके पिताजी एक प्रख्यात प्रधानाचार्य थे, आपकी उच्चतम सेवाओ के लिए आपको तत्कालीन राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत भी किया गया था, आप बहुत ही ईमानदार व कार्यनिष्ट पुरुष थे । चूंकि आपके ससुर भी बहुत ईमानदार और कर्मठ व्यक्ति थे इसीलिए आपको बहुत चाहते थे।

उनकी छत्र छाया में ही हम सब बड़े हुए है. जीवन तो सभी जीते है, अपनी अपनी सुख सुविधा के लिए. पर आपने पूरा जीवन दूसरो के लिए जिया आप दूसरो की प्रत्येक छोटी-बड़ी बातो का ध्यान रखते थे और सभी के प्रिय दद्दा। आपने घर की सभी जिम्मेवारियो को समझा और बाखूवी निभाया भी आपका आदर्श जीवन प्रत्येक के लिए प्रेरणादायक है और आज के बदलते वक्त में दुर्लभ अपने अपनी जिम्मेवारी पूरी निभाई और सभी छोटे भाइयो और बहनों को पढ़ाया लिखाया और विवाह किया और सभी तरह से सम्पन्न किया। आपने अपने लिए कुछ नही चाहा सबसे पहिले अपने भाइयो और बहनों को किया करते थे।

एक बार की घटना है, होलीपुरा में एक नादिया (बैल) बाला आया जो उसके द्वारा सगुण उठाया करता था और भबिष्य बताया करता था। मुहल्ले के सभी लोग अपना अपना प्रश्न पूछ रहे थे । हमारी अम्मा भी खड़ी थी किसीने प्रश्न किया कि बताओ इन माता जी की सबसे अधिक सेवा कोन करेगा। इतने आदमियों के बीच में घूम फिर कर वो बैल दद्दा के पास आ कर खड़ा हो गया। और बास्तव में आपने अम्मा की बहुत सेवा की, बीमारी के समय आपने अम्मा को नहलाना उनके खराब हुए कपडे आदि धोना और चादर आदि साफ़ करना रोज़ की बात थी। आप अपने हाथो से पूज्य माता जी खाना खिलाते थे और अंत में माता जी का निधन आपकी गोदी में ही हुआ।

आप की याददास्त बहुत ही मजबूत व शक्तिशाली थी परिवार के प्रत्येक सदस्य की जन्म तिथि और शादी की तारीख याद रखे थे। सबसे पहले टेलीफोन पर बधाई देने बाले आप ही होते थे. घर पर कोई आता था तो उसको क्या मुख्य प्रवेश दरवाजे पर जा कर उसकी प्रतीक्षा करते थे और साथ लेकर आते थे। इसी प्रकार जाते समय भी दरवाजे तक छोड़ने आते थे ।

उसके बाद आप भोपाल में ही अपना निज मकान बना कर अपने दोनों पुत्रों श्री संदीप और स्व श्री प्रदीप के साथ बस गए। आपने अपनी पोती की शादी बहुत धूम धाम व उत्साह से की। यही आपकी सभी परिवार जनो से अंतिम भेट थी। यही पर आपको इसी वर्ष माथुर चतुर्वेदी महासभा के द्वारा सम्मानित किया गया। आप अंत तक अपने सभी कार्य स्वय करते थे। अल्प बीमार के बाद ६.१२.२४ की सुबह आपका निधन भोपाल में हो गया। भगवान से प्रार्थना है आपकी दिव्य आत्मा को चिर शांति प्रदान करे।

आप की याददास्त बहुत ही मजबूत व शक्तिशाली थी. परिवार के प्रत्येक सदस्य की जन्म तिथि और शादी की तारीख याद रहती थी. सबसे पहले टेलीफोन पर बधाई देने बाली आप ही होती थी घर पर कोई आता था तो उसको क्या क्या पसंद है उसकी तैयारी पहिले से ही सुख सुविधा का ध्यान कह देते थे।

आपका इस संसार से विदा होना हमारे परिवार के लिए अपूर्ण झति तो है ही पर मेरे लिए विशेष.। उनकी प्रत्येक बाते आज याद आरही है, ऐसा लग रहा है की वो यही है और हम सबको अपने प्रेम व आशीष की वर्षा कर रहे हो। हम सब परिवार के सदस्य एक साथ एकत्रित होकर उनको अपनी अपनी श्रधान्जली अर्पित कर रहे है। बस उस परम पिता से एक ही प्रार्थना है कि आप की आत्मा की चिर शान्ति प्रदान करे।

ॐ शान्ति ॐ शांति ॐ शांति

- कृष्ण कांत चतुर्वेदी, मुंबई
(र. क्र. 3069)

अनिल भाई साहब का जाना अखर गया

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।

गीता के इस श्लोक का भावार्थ है कि हर जन्म लेने वाले की मृत्यु निश्चित है इसलिए जो अपरिहार्य है उसके विषय में शोक नहीं करना चाहिए. सनातन परंपरा में भी अक्सर कहा जाता है कि विधि का विधान है कि जो इस संसार में आया है, उसका जाना तय है. एक उम्र के बाद चलते फिरते चले जाना एक तरह से ईश्वर का अनुग्रह है. लेकिन न केवल दिल्ली बल्कि देश के जाने माने चिकित्सक डॉक्टर अनिल चतुर्वेदी उनका जाना अखर गया. मैं उन्हें अनिल भाई साहब के नाम से संबोधित करता था. इस चार जनवरी को वो अस्सी साल के होते. रांची आने के बाद भाई साहब से यदाकदा ही मुलाकात होती थी. लेकिन उनसे लगातार फोन पर बात होती रहती थी. उनका नियमित फोन मेरे पास आता था जिसमें वह न केवल मेरा बल्कि पूरे परिवार का हालचाल लेते थे. इसके बाद भाई साहब टाइम्स ऑफ इंडिया में कंस्लटेंट डॉक्टर थे और टाइम्स दरियागंज स्थित उनका नियमित आना जाना था. साहू रमेश जैन से भी उनका गहरा नाता था और मुझे याद है कि उन्होंने एक बार मेरी मुलाकात भी उनसे करायी थी. उन्होंने ही मेरा परिचय वरिष्ठ पत्रकार पद्मश्री आलोक मेहता से कराया था जो आज भी प्रगाढ़ है।

वह जैसे एक बरगद के पेड़ थे जिसके साये में जाने कितने लोगों को अपनी जिंदगी के सफर को आगे बढ़ाने में मदद मिली. मेरे छोटे बेटे अनंत के जन्म से पहले मैं भ्रम में था कि डिलीवरी कहां करायी जाए. मुझे याद है कि भाई साहब ने शांति मुकंद अस्पताल का रास्ता दिखाया और जहां उसका सकुशल जन्म हुआ. इस दौरान किसी भी डॉक्टरी सहायता के लिए भाई साहब लगातार सुलभ रखते थे. सुजाता भाभी का मार्गदर्शन और सहयोग अलग रहता था. अनिल भाई साहब के व्यवहार में मैंने एक और चमत्कार देखा है. वे जिस अस्पताल से जुड़े, उसका प्रमोटर उनके आगे पीछे मंडराता दिखता था. लेकिन उन्होंने कभी अपने आत्मसम्मान से समझौता नहीं किया. मेरा मानना है कि मैं ही अकेला नहीं हूं. जिसने भी उनकी ओर मदद का हाथ बढ़ाया, उसकी उन्होंने भरपूर मदद की है. लेकिन उनकी सबसे बड़ी खूबी यह है कि मजाल है कि किसी को यह पता लग जाए कि उन्होंने क्या मदद की।

अनिल भाई साहब के कई रूप हैं. उनका एक रूप मददगार का है तो एक रूप पुराने संस्कारों और परंपराओं को बरकरार रखते हुए प्रगतिशील व्यक्ति का भी है. उन्हें पढ़ने लिखने का खासा शौक था और उनकी भाषा शैली किसी बड़े पत्रकार और साहित्यकार से कमतर नहीं थी. शेरो शायरी का उन्हें विशेष शौक था और भाषण वे लाजवाब देते थे. वह लोगों को जोड़ना जानते थे. इन्हीं संस्कारों के कारण वे इस दौर में भी परिवार को एक सूत्र में बांधे हुए थे. जो भाई साहब की शरण में गया, उसका उन्होंने उद्धार किया. उन्हें यदि पता चल जाए कि कोई रिश्तेदार बीमार है, तो वे रिश्तेदार को बुलाकर अपने घर पर रखकर उसका इलाज करवाकर और दुरुस्त करके भेजते थे. उनकी पत्नी सुजाता भाभी का भी योगदान कम नहीं आंका चल जाए कि कोई रिश्तेदार बीमार है, तो वे रिश्तेदार को बुलाकर अपने घर पर रखकर उसका इलाज करवाकर और दुरुस्त करके भेजते थे. उनकी पत्नी सुजाता भाभी का भी योगदान कम नहीं आंका जा सकता है. उनकी मदद के बिना भाई साहब शायद इतनी मदद नहीं कर पाते. इतने बड़े परिवार को उन्होंने जिस खूबसूरती से एक सूत्र में बांधे रखा, वह सराहनीय है. बड़ा परिवार है जिसकी वजह से उनके घर रिश्तेदारों का आना जाना अक्सर लगा रहता था. लेकिन सुजाता भाभी के प्रेम में कभी किसी ने रत्ती भर भी फर्क महसूस नहीं किया होगा. वह सबका सत्कार करती और मजाल है कि इस दौरान उनके चेहरे पर कभी कोई शिकन आयी हो. ऐसे विरले जोड़े कहां देखने को मिलते हैं जिनमें ऐसी गजब की आपसी समझ हो. सबसे बड़ी बात यह कि उनके परिवार के सभी सदस्यों ने उनके गुणों को आत्मसात किया है. उनके कारण पूरे परिवार का वातावरण ऐसा बन गया है जिससे प्रभावित हुए बिना कोई नहीं रह सकता है. उनके बेटों सौरभ व समर्थ और बेटी शुचि ने भी भाई साहब और भाभी जी के गुणों को आत्मसात किया है। अनिल भाई साहब में मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी आस्था थी।

उनके व्यक्तित्व से एक ही तस्वीर उभरती है – वृहद परिवार और समाज के प्रति आदर और पूर्ण समर्पण. अनिल भाई साहब बहुत उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और उनकी दृष्टि में अपने पराये सब एक समान थे. भाई साहब ने अपने क्षेत्र में भारी प्रतिष्ठा अर्जित की और उन्हें अनेक पदकों और पुरस्कारों से नवाजा भी गया. पुराणिक आख्यान है कि पिता एक प्रकार से जड़ हैं और बेटा और बेटी उस जड़ की जगह लेते हैं और यह प्रक्रिया सतत चलती रहती है. भाई साहब ने भी अपने सारे गुण अपने परिवार

को दे दिये हैं. उम्मीद है कि अगली पीढ़ी भी इन विरले गुणों को आत्मसात करेगी और यह परंपरा चलती रहेगी. हम सब भाई साहब के हृदय से ऋणी हैं।

न केवल मेरा बल्कि पूरे परिवार का हालचाल लेते थे. इसके बाद उनसे थोड़ी देर राजनीतिक और साहित्यिक चर्चा होती थी। जब मैं दिल्ली इंडिया टुडे में नौकरी करने आया, तब उनसे परिचय प्रगाढ़ हुआ. मेरी यह शुरुआती नौकरियों में से एक थी. जैसा कि हम सब जानते हैं कि दिल्ली महासागर है. मैं मथुरा जैसे छोटे स्थान से आया था, दिल्ली में रचने बसने की कला मुझे नहीं आती थी। मुझे याद है कि भाई साहब ने सबसे पहले सहारा दिया और दिल्ली को जानने समझने की तमीज सिखायी. भाई साहब दिल्ली में रचे बसे थे. डॉक्टर, राजनेता, ब्यूरोक्रेट, साहित्यकार और पत्रकार ऐसा कौन सा वर्ग है जिसके शीर्ष लोगों से भाई साहब का परिचय न हो। उस समय भाई साहब का फ्लैट तैयार हो रहा था और थोड़ा लंबा खिचता चला जा रहा था और वे पटपटगंज के ध्रुव एपार्टमेंट रहते थे. बाद में वह एकता गार्डन में अपने फ्लैट में रहने आ गये. मैं पास में ही मयूर विहार में रहने आ गया था और मेरा बड़ा भाई स्वर्गीय अमिताभ पटपड़गंज में ही भाई साहब के बिल्कुल बगल के धर्मा एपार्टमेंट रहने लगा था. बस उसके बाद तो भाई साहब से मिलने का सिलसिला चल पड़ा. मैं अक्सर उनके घर जाता जहां उनके अलावा उनके पिता स्व, बैकुंठ नाथ जी, जिन्हें हम सब बड़े चाचा कहते हैं, उनसे भी मुलाकात होती थी. वह बड़े शिक्षाविद और जिंदगी के अनुभवों से तपे हुए व्यक्ति थे. हमारा संपर्क सूत्र हमारी ताई स्वर्गीय कनक चतुर्वेदी थीं जिनके अनिल भाई साहब छोटे और प्रिय भाई रहे हैं। भाई साहब टाइम्स ऑफ इंडिया में कंस्लटेंट डॉक्टर थे और टाइम्स के दरियागंज स्थित उनका नियमित आना जाना था. साहू रमेश जैन से भी उनका गहरा नाता था और मुझे याद है कि उन्होंने एक बार मेरी मुलाकात भी उनसे करायी थी. उन्होंने ही मेरा परिचय वरिष्ठ पत्रकार पद्मश्री आलोक मेहता से कराया था जो आज भी प्रगाढ़ है।

– आशुतोष चतुर्वेदी
प्रधान संपादक, प्रभात खबर
(र. क्र. 3062)

सावधान-बिजली उपकरण

- रुपक चतुर्वेदी, लखनऊ

आधुनिक जीवनशैली में बिजली उपकरणों का उपयोग बढ़ता ही जा रहा है, गर्मी में ए सी,फ्रिज तो सर्दियों में हीटर,ब्लोअर जैसे उपकरण हमारी रोजमर्रा की जरूरत बन गए हैं। इनसे जितनी सुविधा एवं आराम मिलता है,जरा सी असावधानी या लापरवाही उतनी ही जानलेवा साबित हो सकती हैं।जब भी इनके रखरखाव में कोई गलती हो जाती है तो वह जानलेवा साबित हो सकती है। हीटिंग उपकरण में कोई कमी होने पर बेहद हानिकारक एवं खतरनाक , जानलेवा कार्बनमोनोऑक्साइड जैसी गैस निकल सकती है, जो रंगहीन,गंधहीन एवं स्वाद हीन होती हैं। हीटिंग उपकरण के देखभाल और सफाई में असावधानी या लापरवाही होने पर कार्बन मोनोऑक्साइड जैसी गैस बन सकती है, खासकर जब उपकरण में आक्सीजन की उचित आपूर्ति नहीं हो पाती या वेंटिलेशन सही ढंग से काम नहीं कर पाते तो गैस उत्सर्जन का कारण बन सकता है, जैसे चिमनी या वेंटपाइप में अवरोध होने से कार्बन मोनोऑक्साइड कमरे में जमा हो सकती है। यदि हीटिंग उपकरण में जंग या कोई अन्य खराबी हो तो गैस उत्सर्जन बढ़ सकता है। कार्बनमोनोऑक्साइड बिना लक्षण के शरीर में प्रवेश कर सकती हैं तो शरीर के विभिन्न अंगों तक आक्सीजन आपूर्ति बाधित हो सकती है, जिससे कई शारीरिक समस्याएं भी पैदा हो जाती है। कार्बन मोनोऑक्साइड की विषाक्तता से सिरदर्द, चक्कर आना, उल्टी आना, जी मिचलाना,सांस की समस्याएं, दिल की धड़कन में अंतर,थकान या कमजोरी तथा भ्रम की स्थिति संभव हो सकती हैं। यदि समय रहते इन लक्षणों पर ध्यान नहीं दिया गया तो समस्याएं गंभीर रूप ले कर जानलेवा भी साबित हो सकती है। इसके अलावा इन खतरों से बचने के लिए सावधानी के साथ ही कुछ सामान्य बातों पर ध्यान देना चाहिए जैसे हीटिंग उपकरण को प्रत्येक वर्ष उपयोग में लाने से पहले उसका निरीक्षण एवं मरम्मत किसी योग्य एवं प्रशिक्षित मिस्त्री से अवश्य करवा लें, जहां भी उपकरणों का प्रयोग किया जाए, वहां वेंटिलेशन की अच्छी व्यवस्था हो , साथ ही सभी वेंटिलेशन पाइप लाइन ठीक से काम कर रहे हो। कारखानों में अतिरिक्त सावधानी भी बरतनी चाहिए। कार्बन मोनोऑक्साइड से बचने हेतु उपकरणों के समीप गैस डिटेक्टर अवश्य लगाएं। डिटेक्टर गैस के स्तर के विषय में चेतावनी देता है। चिमनी एवं वेंट पाइप को नियमित रूप से सफाई की व्यवस्था रखें, जिससे उनमें किसी तरह का अवरोध पैदा न हो। उचित व्यवस्था के बाबजूद भी यदि आपको या किसी अन्य सदस्य को कार्बन मोनोऑक्साइड विषाक्तता के लक्षण महसूस हो तो तुरंत खुली जगह पर निकले और चिकित्सक की सलाह लें। यदि आवश्यक सावधानी बरतें तो इस ख़तरनाक गैस से हम बच सकते हैं।

एक संस्था थे धीरेन्द्र भाई साहब

क्षणभंगुर जीवन की कलिका,कल प्रातः को जाने खिली न खिली,
मलयाचल की शुचि शीतल मन्द सुगन्ध समीर मिली न मिली।
कलि काल कुठार लिए फिरता,तन नम्र से चोट झिली न झिली,
कहले हरिनाम अरी रसना,फिर अन्त समय में हिली न हिली।।

संसार में ऐसे विरले लोग ही होते हैं जिनका व्यक्तित्व किसी संस्था से कम नहीं होता है।ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी धीरेन्द्र भाई साहब स्वयं में एक संस्था थे । आपने मातृभूमि होलीपुरा में ही प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण कर आगरा के चौबे हास्टल में रहकर उच्च शिक्षा प्राप्त की। परिणामस्वरूप आपका जीवन ग्राम होलीपुरा की सर्वांगीण उन्नति के लिए सदैव समर्पित रहा। स्वामीजी की मूर्ति स्थापना ,गुफा पर भण्डारा,होली मिलन समारोह,भागवत कथा एवं मन्दिर बिहारी जी का जीर्णोद्धार जैसे उल्लेखनीय कार्य आपके सफल नेतृत्व का ही परिचायक हैं।समाज में आपकी भूमिका सदा लोगों को प्रोत्साहित करने की रही।महासभा में कानपुर समाज का प्रतिनिधित्व आपके दिशानिर्देश पर निर्धारित होता था ।कभी भी अपने नाम की स्वीकृति आपने नहीं दी क्योंकि आपने कभी भी पद को नहीं कार्य को महत्व दिया।अजात शत्रु एवं बेताज बादशाह आपके व्यक्तित्व के पर्याय थे।पद से कोसों दूर रहने वाले धीरेन्द्र भाई साहब ने 'प्रबल प्रेम के पाले पड़कर प्रभु को नियम बदलते देखा' जैसी उक्ति को चरितार्थ करते हुए विशेष परिस्थिति में कानपुर सभा के सभापति का चुनाव लड़ा और ऐतिहासिक जीत दर्ज करायी। आनंद सिंह चतुर्वेदी परिवार सदा आपके एक इशारे पर तत्पर रहता तथा परिवार की माला के धागा के समान आप सबको बांधे रखते ।समाज में एक दूसरे के पूरक रहे श्री अविनाश चन्द्र जी 'भइया' कानपुर के शब्दों में धीरेन्द्र चतुर्वेदी बहुत समाज, ग्राम (होलीपुरा) व परिवार प्रेमी स्वभाव के उत्साही व्यक्ति थे। कानपुर में कोई भी सभा का कार्यक्रम हो धीरेन्द्र भाई अवश्य ही सक्रिय उपस्थिति रखते थे और औरों को भी जोड़ने का प्रयास करते थे।वे कानपुर सभा के अध्यक्ष रहकर संरक्षक थे और बीमारी के बावजूद सभी कार्यक्रमों में शिरकत करते थे।सभा के अलावा पहले होली मिलन थोड़े लोग मिलकर कराते थे, धीरेन्द्र भाई उसमें बड़ा योगदान देते थे।होलीपुरा में कोई कार्यक्रम हो सबको जोडकर व चन्दा इकट्ठा कर व स्वयं दस दिनों तक रुक कर कार्यक्रम को पूरा सफल बनवाते थे इन्हीं गुणों के कारण मैं तो उन्हें सदैव मुखिया ही कहता था।वह मुझसे उम्र में काफी छोटे थे फिर भी मुझे हर काम में जोड़ें रखते थे।होली पुरा में कार्यक्रमों के लिए उन्होंने मुझसे होलीपुरा ग्राम विकास के नाम से खुद और हम-सब से पैसै एकत्रित कर बैंक में जमाकर एकाउंट चलाया था। धीरेन्द्र भाई के जाने से कानपुर समाज,होलीपुरा व मेरी अपूर्णीय क्षति हुई है।प्रभू होली बाबा और स्वामीजी की कृपा से उन जैसा और कोई भाई उठ खड़ा हो गांव में कार्यक्रम पहले की तरह कराता रहे यही कामना करता हूं।

भाई करुणेश के शब्दों में - आदरणीय धीरेंद्र दादा आनंद सिंह परिवार के मार्ग दर्शक , हम सभी परिजनों के प्रिय , खास कर मेरे अभिभावक और प्रेरणा स्रोत को आज काल के गाल ने ग्रसित कर लिया और वे हम सभी को असहाय हालात पर छोड़ कर परलोक गमन कर गए हैं जिसकी क्षति अपूर्णीय है। उनके स्नेह को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता ,आपकी स्मृति हमेशा दिल और दिमाग में बनी रहेगी ।श्री कृष्ण कान्त जी लखनऊ ने लिखा- प्रिय भाई धीरेन्द्र की सुनकर अति दुखी हूं।हमारे मुहल्ले का हीरा और गांव का एक स्तंभ चला गया।सब को मिलाकर चलना,सभी की राय लेना धीरेन्द्र भाई की एक अलग विशेषता थी।होलापुरा के सभी कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेना और उसे सफल बनाना उनका उद्देश्य रहता था। कानपुर सभा हो या धर्मशाला सभी में उनका योग दान रहता था।श्री विपिन पाण्डेय ने संवेदना व्यक्त करते हुए लिखा -यह लिखते हुए मन को विश्वास ही नहीं हो रहा है और मन बहुत बोझ महसूस कर रहा है कि सबके प्रिय पूज्यनीय धीरेन्द्र भाई साहब अब हम लोगों का साथ छोड़ गये हैं।

सबका साथ देने वाले, सबकी खुशी में खुश रहने वाले , हर प्रोग्राम में मित्र मंडली के साथ एकजुट होकर माहौल को खुशनुमा बना कर मौज लेने वाले धीरेन्द्र भाई साहब की रिक्तता हम सभी के मन को हमेशा उनकी याद दिलाती रहेगी।

उनके व्यक्तित्व को हम सभी हमेशा याद करेंगे।उनकी यादें हम सभी के मन मष्तिक में अमिट रहेंगीं। श्री विजय जी कोरबा ने लिखा- होलीपुरा में हमारे बचपन के साथी, आगरा में भी तीन साल फिर कानपुर में कुछ महीनों के हमारे अल्पावास, हम उसके बहुत करीब रहे और बाद में होलीपुरा के कार्यक्रमों में उससे बहुत निकटता रही । भाई धीरेन्द्र का सौम्य व्यक्तित्व सदैव याद आएगा ।ऐसे स्नेही जन जिनसे पिछली बार कानपुर में उसके घर पर अंतिम अल्प मुलाकात हो पाई थी उसकी कमी आजीवन खलेगी । भाई शशांक आपकी स्मृति को स्मरण कर लिखते हैं कि - महासभा की रिसड़ा बैठक के उपरान्त कोलकाता यात्रा में आपकी दरियादिली की याद तिबारी की रबड़ी व कोलकाता के गोलगप्पे की जीवन भर याद रहेगी।महासभा की अन्नपूर्णा योजना हेतु आपका उत्साहवर्धन करना सदा स्मरणीय रहेगा। ऐसी अनेक संवेदनायें बान्धवों ने व्यक्त कीं हैं जो आपके स्नेहिल व्यक्तित्व को दर्शाती हैं।आपकी पवित्र एवं पावन स्मृति को शत शत नमन।

प्रस्तुति - भरत चतुर्वेदी 'अचल'
(र. क्र. 3073)

मूर्धन्य कलाकार - श्री त्रिलोकीनाथ तिवारी

बहुमुखी प्रतिभा के मूर्धन्य कलाकार मेरे पिता श्री त्रिलोकीनाथ तिवारी ।जी हाँ जो शीर्षक मैंने अपने पिता के लिए लिखा है वो कोई अतिश्योक्ति नहीं हैं। मेरे पिता श्री त्रिलोकीनाथ जी का जन्म 7 मई 1934 को चदंवार फिरोजाबाद (उ.प्र.) में स्व. श्री कृष्ण देव तिवारी (बच्ची गुरु) के घर हुआ। पापा अपने घर में तीसरे नंबर के सबसे छोटे भाई थे। परन्तु जिम्मेदारी व समझदारी में नंबर एक। अपनी आरंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद पापा ने एम. ए (हिन्दी) बी. एड. तक शिक्षा हासिल की। पापा ने अपनी पहली नौकरी देवास से शुरु की उस समय उनका वेतन था मात्र 70 रुपए। कुछ सालों तक देवास में रहने के पश्चात बाबा के कहने पर पापा ने अपना स्थानांतरण मुरैना करवा लिया, जो म.प्र. का अंतिम स्टेशन था, फिरोजाबाद के लिए। यहाँ पर शा.उ.मा.वि. में व्याख्याता के पद पर आसीन रहते हुए वो एन.सी.सी. ऑफिसर पद पर वर्षों तक कार्यरत रहे। पापा का अनुशासन इतना जबरदस्त था कि वो घर, परिवार, स्कूल सब जगह लागू रहता था। पापा गौर वर्ण, चौड़ा चेहरा और उस पर रुवाबदार मूँछे क्या कहने, एक बहुत ही आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे। यही कारण था कोई उनको थानेदार साहब, तो कोई पुलिस का बड़ा अफसर समझता था। विद्यालय में इतना सख्त अनुशासन कि शरारती और उपद्रवी बच्चों की तो मानो शामत ही आ जाती। हमारे पापा नकल के घोर विरोधी थे तो नकलची छात्रों के तो प्राण ही निकल जाते थे जब पापा स्कूल के लिए आते। एक बार तो किसी शरारती ने ब्लैक बोर्ड पर लिख दिया आज कत्ल-ए-आम है। कक्षा का माहौल पिन ड्रॉप साइलेंस रहता था। पापा जिस तरह से पढ़ाते थे, एक एक शब्द का अर्थ समझ आ जाता था। उनके पढ़ाए हुए बहुत से छात्र आगे जाकर बड़े-बड़े पदों पर आसीन हुए और कुछ छात्र तो पापा से मिलने भी आते थे, उनका आशीर्वाद लेने।

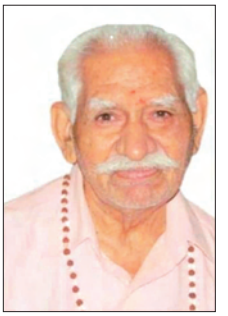

पापा का व्यक्तित्व निहायत ही ईमानदार और सत्य प्रिय था। हमारे पापा के 6 बच्चे हैं। हम पांच बहनें और एक भाई अजय तिवारी (अध्यक्ष चतुर्वेदी महासभा शाखा, ग्वालियर) भारतीय रेलवे में स्टेशन मास्टर के पद पर कार्यरत है। हम सभी बहनें अपने -अपने घरों में सानंद जीवन व्यतीत कर रहें हैं। पापा ने हमें बचपन से सिखाया कि यदि और कोई गलती हुई है,तो झूठ न बोलकर सबसे पहले उन्हें बताओ। उनका कहना था कि यदि किसी तीसरे व्यक्ति ने वो बात बताई तो अच्छा न होगा। पापा को राजनीति में भी अच्छी रूचि थी ।जब हमारे कालेज में चुनाव होते तो पापा का कहना होता बेटा किंग मत बनो किंग मेकर बने रहो। उनकी इस बात को हमने हमेशा माना और पूरे कॉलेज में खूब मान सम्मान प्राप्त किया ।

पापा गुणों के भण्डार थे। उनकी संगीत में बेहद रूचि थी और माँ सरस्वती का आशीर्वाद साथ में था। इतने बड़े परिवार की जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए भी वो अपने हारमोनियम के साथ ब्रज लोकगीतों, भजनों और होरियों का रियाज करते थे। इसी के परिणामस्वरूप उन्हें आकाशवाणी दिल्ली, मथुरा और जयपुर से लोकगीतों को गाने का अवसर प्राप्त हुआ। कंठ इतना मधुर और आवाज में इतनी खनक कि लगता था कि उनके पास से उठो ही नहीं । हम सभी भाई बहनों को भी अपने साथ में गवाया करते थे। ब्रज की होरियों के इतने शौकीन थे कि होली के अवसर पर उनके प्रोग्राम एडवांस में ही तय हो जाते थे। ग्वालियर और फिरोजाबाद दो जगह तो पक्का ही था। पूरी रात होली गायन चलता था उनको तो स्पेशल ऊर्जा मिल जाया करती थी, होलियॉं गाकर ।

यहाँ पर एक बात रेखांकित करना चाहती हूँ कि रंग झर बरसे री´ का जो संस्करण था उसमें जिन पांच महानुभावों के नाम थे उनमें से एक नाम श्री त्रिलोकी नाथ अर्थात मेरे पापा का भी था । पापा ने अपना पूरा जीवन मुरैना में ही बिताया। यहीं पर उन्होंने बाबा, दादी, बुआ हमारे नाना नानी सभी की तन मन और धन से सेवा की। और यही सेवा भाव वो हम सभी भाई बहनों में छोड़ गए हैं। वृद्धावस्था में भाई का स्थानांतरण ग्वालियर हो गया तो वे ग्वालियर आ गए। मम्मी के निधन के बाद वो काफी शिथिल हो गएऔर 3 फरवरी 2024 को वो परलोक वासी हो गए। पापा हम सभी ये प्रतिज्ञा करते हैं कि जिन आदर्शों पर आपने हमे चलाया हम जिंदगी भर उन्हीं का अनुसरण करेंगे। कभी भटकेंगे नहीं आप अपना आशीर्वाद बनाए रखिएगा। अंततः निम्न पंक्तियो के साथ मैं अपने पापा को सादर श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ --

कामयाब होने का पाठ पढ़ाया करते थे,
पापा हमेशा मेरा हौसला बढ़ाया करते थे।
मेरी आशा मेरा सम्मान भी थे, मेरे पापा मेरा अभिमान थे।

- क्षमा चतुर्वेदी, ग्वालियर
(र. क्र. 3072)

सम्मान पत्र

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

श्री माधुरी मोहन चतुर्वेदी

को सामाजिक संस्कृति जीवंत रखने के क्षेत्र में

समाजरत्न सम्मान

से अलंकृत कर हम गौरवान्वित है।

श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
सभापति
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

शशांक चतुर्वेदी
मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक 22 दिसम्बर 2024, ग्वालियर

सम्मान पत्र

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

श्री नानक चन्द्र चतुर्वेदी

को सामाजिक योगदान के क्षेत्र में

समाजरत्न सम्मान

से अलंकृत कर हम गौरवान्वित है।

श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
सभापति
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

शशांक चतुर्वेदी
मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक 22 दिसम्बर 2024, ग्वालियर

सम्मान पत्र

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

श्री छैल बिहारी चतुर्वेदी

को पुलिस सेवा के क्षेत्र में

समाजरत्न सम्मान

से अलंकृत कर हम गौरवान्वित है।

श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
सभापति
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

शशांक चतुर्वेदी
मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक 22 दिसम्बर 2024, ग्वालियर

सम्मान पत्र

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

श्री विश्वनाथ चतुर्वेदी

को सामाजिक येगदान के क्षेत्र में

समाजरत्न सम्मान

से अलंकृत कर हम गौरवान्वित है।

श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
सभापति
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

शशांक चतुर्वेदी
मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक 22 दिसम्बर 2024, ग्वालियर

शीत सोपान

पारा लुढ़का तीन पर
चढ़े शीत सोपान।
अब तो दर्शन दीजिए
कहां छिपे दिनमान ।।

oooooooooo

चादर ओढ़े बर्फ की
हवा करे बेहाल ।
चार कदम सूझे नहीं
कोहरे का जंजाल।।

oooooooooo

सर्दी के प्रकोप से
हुए घरों में बन्द।
चाय की गरमी गई
लगे अलाव मंद।।

– डा० कुश चतुर्वेदी

शाखा समाचार

लखनऊ पिकनिक

चतुर्वेदी मंडल लखनऊ की रविवार 22 दिसम्बर 24 को होने वाली पिकनिक में सभी बांधव दिलकुशा की ओर उत्साह से कूच रहे थे, दिलकुशा गार्डन जो मुगलों द्वारा निर्मित सुदर और सुदूर फैला बगीचा है और अपने ऐतिहासिक महत्व के कारण लखनऊ के दर्शनीय स्थलों में शुमार होता है 1857 में अग्रेजो के विरुद्ध हुए स्वातंत्र्य आंदोलन को दवाने के लिए अंग्रेजी सेना और हथियारों के संग्रह का यह मुख्य केन्द्र था। पिकनिक स्थल पर पहुँच कर पालागन-पालागन के उद्घोष सुनाई पड़ने लगे,जो हम सबका पहचान वाक्य है इसमें आत्मीयता की मधुरता हमें एकता के सूत्र में बांधती है। तरह तरह की पकौड़ियों और चाय को उदरस्थ करने के बाद मिलने जुलने का दौर प्रारम्भ हो गया -- - भूंखे भजन न होई गोपाला हमारा वेद वाक्य है अध्यक्ष अजय जी पुत्तन जी शिशिर जी, तनुजा जी द्वारा आगंतुकों का गर्मजोशी से किये जाने वाला स्वागत आत्मीयतापूर्ण था प्रफुल्ल, हर्ष ,दिवस के चुटीले अंदाज़ बातावरण को नया रंग प्रदान कर रहे थे शानदार हरे भरे लॉन मैं एक तरफ महिलाये तो दूसरी तरफ पुरुष मथुरिया विशेषता चवाब चिठ्ठा में लीन थे बरिष्ठ जन पदम भाई साब ,हेमन्त जी राकेश जी मैनपुरी ,प्रताप जी लोनी ,उर्वशी जी लोनी गिरजेश जी ,रीता जी अनिल जी,भारत भूषण जी, शैल जी बसंत जी कार्यक्रम को चार चांद लगा रहे थे अपने स्वजनों के बीच ऐसे क्षणों का मिलना वाकई दैवीय कृपा से संभव होता है। धूप की तेजी अपने चरम पर थी और भाई आनंद,ज्योति लोकनाथ ने अपनी गायन और प्रस्तुतिकरण के माध्यम से खूब वाह वाही बटोरी सामाजिक मंच प्रतिभायें को निखारने के कार्य सफलता पूर्वक कर सकते है।

इसके बाद होउसी की मुनादी हो चुकी थी, जिसमे सम्मलित होने के लिए सब आतुर और नियमों को समझने के लिए बारंबार जिज्ञासा प्रगट कर रहे थे, धन के आगमन का प्रश्न था भाई पुत्तन जी और तनुजा,नेहाजी की सहायता से खेल प्रारंभ हुआ लोंगों का उत्साह अपने शीर्ष पर था अति उत्साह में अपूर्ण क्लेम भी बार बार होता रहा और फिर इनामों के मिलने का दौर शुरू हुआ और पुरस्कार स्वरूप राशियां मिलने लगी और अंत में मुझे भी जो राशि कूपन ख़रीदने में व्यय की गई थी, वह हौसी के पुरुस्कार के रूप में बापस आ गयी अब बच्चो की चित्रकला प्रतियोगिता और महिलायों की कुर्सी दौड़ प्रारंभ हो चुकी थी जिम प्रतियोगी पूरी दमखम के साथ प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे थे तो दूरी ओर महाभारत कालीन खेल के उत्सुक लोंगो की व्याकुलता देखते ही बनती थी आखिरकार पार्क का एक सुदूर कोना इस चमत्कारी खेल का साक्षी बना और दीन दुनिया से बेखबर लीन हो गए अब बारी भोजन की आ चुकी थी शानदार गरमा गरम भोजन बड़ी आतुरता से अपने प्रियों का इंतज़ार कर रहा था कि कब उनके आशिक आएं और उनका मिलन हो, पकोड़ी का झोर, रायता सब्जियों और गर्मागर्म पूरियाँ ने भूख को और जोर से प्रज्ज्वलित कर दिया ,पूरी तरह से भोजन के प्राप्ति के बाद गुलाब जामुन ने सोने में सुहाग का कार्य किया और भरपूर तृप्ति के बाद गपशप के बीच चाय की चुस्कियां से सभी ने बिदा ली। एक शानदार यादगार और सुखद पलों को प्रदान करने के लिए आयोजकों को हार्दिक धन्यवाद।

- अध्यक्ष अजय जी, लखनऊ

आगरा

महिला चिकित्सा शिविर

दिनांक 30/12/2024 श्री माथुर चतुर्वेदी सभा रजि० आगरा की महिला प्रकोष्ठ द्वारा एक निःशुल्क महिला चिकित्सा शिवर का आयोजन जेल हाउस रेस्टोरेंट के पार्टी हॉल में आयोजित किया गया जिसमें महिलाओं को रजोनिवृति के पश्चात होने वाली समस्याओं एवं सर्वाइकिल कैंसर के बारे में विस्तार से चर्चा की गई प्रोजेक्टर के माध्यम से सभी बीमारियों के बारे में चर्चा की गई कैंप में शामिल महिलाओं का ब्लड शुगर हीमोग्लोबिन ब्लड प्रेशर आदि की निःशुल्क जांच की गई तथा मुफ्त दबाओ का भी वितरण किया गया आगे इंटर कॉलेज एवं डिग्री कॉलेज में भी लड़कियों को सर्वाइवल कैंसर के बारे में चर्चा की जाएगी तथा इसके लिए टीके जोकि 3 लगते हैं। सभा की सौजन्य से निशुल्क लगाए जाएंगे कैंप के आयोजन में इंडियन मोनोपॉज पब्लिक अवेयरनेस सोसाइटी एवं शूरा बायोटेक का विशेष योगदान रहा डॉ संगीता चतुर्वेदी डॉ संतोष डॉ संजना का विशेष योगदान रहा डॉ संगीता चतुर्वेदी ने इस आयोजन को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया महिला प्रकोष्ठ की संयोजक निधि चतुर्वेदी, अध्यक्ष शेफाली चतुर्वेदी, उपाध्यक्ष रेनू कपिल चतुर्वेदी, बबीता, पल्लवी, चारु आशीष, निहारिका ,अंजली अमित तालगांव ,अंजली मिश्रा ,आदि ने पूर्ण सहयोग दिया अंत में हाई टी की व्यवस्था ने सभी आगंतुकों का मन प्रसन्न कर दिया सभी ने डॉ संगीता चतुर्वेदी निधि आशीष को धन्यवाद दिया और आगे भी ऐसे कार्यक्रमों को करने में पूर्ण सहयोग देने का वायदा किया

- श्रीमती शेफाली चतुर्वेदी, अध्यक्ष
महिला प्रकोष्ठ
श्री माथुर चतुर्वेदी सभा आगरा रजि० आगरा

समाज समाचार

■ हमारे प्रेरणास्रोत पूज्यनीय स्वर्गीय श्री उमेश चंद्र चतुर्वेदी

जन्मः 05.01.1937 बैकुंठ गमनः 01.02.2024 सेवानिवृत उप पुलिस अधीक्षक, म.प्र. सुपुत्रः स्वर्गीय श्रीमती चंद्रा देवी एवम् स्वर्गीय श्री देवकृष्ण चतुर्वेदी, तरसोखर श्रृद्धावनतः पत्नी श्रीमती इंद्रा चतुर्वेदी एवम् समस्त परिवार 98 आजाद नगर उज्जैन, म. प्र.-456010

(र. क्र. 3068)

***

■ चि.सजल चतुर्वेदी ने सीए की परीक्षा उतीर्ण की। 26 दिसंबर को सीए का परिणाम घोषित हुआ। चि.सजल चतुर्वेदी (मैनपुरी/मथुरा) के श्री चंद्रभान चतुर्वेदी जी के पौत्र और दिलीप चतुर्वेदी के पुत्र हैं।

■ कुमारी खुशी चतुर्वेदी पुत्री श्रीमति नीता-मनोज (सागर/आगरा) के दिनाँक 4 जनवरी को 22वे जन्मदिन के अवसर पर अन्नपूर्णा सहायतार्थ 1100/- प्रदान किये। बधाई। **(र. क्र. 3066)**

■ पूज्य पिताजी स्व. प्रहलाद नारायण पुत्र स्व. उमादत्त शास्त्री (चंद्रपुर/ आगरा) की दिनांक 8 जनवरी 2025 को 42वीं पुण्यतिथि के अवसर पर अन्नपूर्णा सहायतार्थ 1100/- प्रदान किये। **(र. क्र. 3066)**

■ श्री प्रतीक सुपुत्र श्री विनोद जी (मैनपुरी/लखनऊ)एवं उनकी पत्नी श्रीमती शिखा ने 21 अगस्त को अपनी मोटरसाइकिल से 24 देश की यात्रा शुरू की थी प्रतीक एवं शिखा अपनी यात्रा पूरी कर इंडिया लौट आए हैं , दोनों पेशेवर बाइकर है,उन दोनों के सम्मान में इंडिया बाइक Assosiation द्वारा गोवा में उनका भव्य समारोह में स्वागत किया गया। महासभा दोनों को उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामना करती है।

■ संशोधन जनवरी माह में प्रकाशित श्रद्धांजलि विज्ञापन में मंजू चतुर्वेदी की जन्म की तारीख 22 दिसंबर 1949 पढ़ी जाए।

संपादक के नाम पत्र

सम्पादक जी पालागन,आपकी सम्पादकीय में चंद्रिका का नियमित प्रकाशन एवं वितरण प्रशंसनीय है। इसमें महासभा के मंत्री शंशाक जी का योगदान भी शब्दों से परे है। महासभा मंत्री पद की जिम्मेदारी के साथ ही प्रकाशन देखने के साथ ही आदरणीय उषा जी के नेतृत्व में दिल्ली एवं ग्वालियर मीटिंग का सफल आयोजन भी सफलता का एक नया आयाम है,जिस सफलता के साथ सदस्यता अभियान एवं अन्नपूर्णा योजना का संचालन में अथक प्रयासों के लिए सभापति उषा जी एवं मंत्री शंशाक जी बधाई के हकदार हैं। हम सभी कार्यकारिणी सदस्य सभापति एवं मंत्री की हर योजना को सफल बनाने हेतु पूर्ण निष्ठा एवं परिश्रम से सहयोग करेंगे।

- नवीन चन्द्र, लखनऊ

सम्पादक जी पालागन। जनवरी का अंक मिला, अपनी बात में उषा जी ने युवा महोत्सव योजना से युवा वर्ग को जोड़ने की पहल प्रशंसनीय है। सम्पादकीय में महाकुंभ स्नान के पुण्य लाभ को नियमित प्रार्थना से समाज सेवा से जोड़ने का उपयोगी प्रयास है। चित्रा जी का कल्पवास लेख के साथ ही मनीष जी का महाकुंभ जानकारी बढ़ाने वाला है। अन्य पाठ्य सामग्री भी उपयोगी है, शुभकामनाओं सहित

- अनुराग टिंचू, कानपुर

बिछड़े स्वजन

* श्रीमती सरोजनी चतुर्वेदी पत्नी स्व.श्री फतेह चंद चतुर्वेदी (सोतीयना,मैनपुरी/नोएडा) का स्वर्गवास दिनाँक 29/12/24 को नोएडा में 95 वर्ष की आयु में हो गया।

* श्री रविकांत चौबे सुपुत्र स्व. भैरव प्रसाद जी चौबे (होलीपुरा/हरदा) का स्वर्गवास अपने पुत्र राहुल के पास भोपाल में दिनांक 01 जनवरी 2025 को हो गया। अंतिम संस्कार हरदा में होगा। ॐ शाँति

* श्री बाबू लाल चतुर्वेदी पुत्र स्वर्गीय टीकाराम चतुर्वेदी (मैनपुरी/कानपुर/गुड़गांव) का स्वर्गवास दिनाँक 01 जनवरी 2025 को हो गया।

* विजय भाई पुत्र स्व. परमेश्वरी दास (पी.डी.वकील) (कछपुरा/कलकत्ता) का स्वर्गवास दिनाँक 02/01/25 को कलकत्ता में हो गया।

* श्री नीरज चतुर्वेदी पुत्र स्व. सुभाष चंद्र जी चतुर्वेदी (तरसोखर/दिल्ली)सुपौत्र श्री त्रिलोक चंद्र चतुर्वेदी का अचानक हृदय गति रुकने से दिनाँक 01 जनवरी 2025 की रात 10:00 बजे देहांत हो गया।

* श्री विमल चंद्र चतुर्वेदी पुत्र स्व. प्यारे लाल चतुर्वेदी (फरौली/बरेली) का लगभग 88 वर्ष की आयु में बरेली में आज दिनाँक 03 जनवरी 2025 को हो गया।

* श्रीमती उषा चतुर्वेदी,बेबी जी पत्नी स्व.श्री नागेंद्र नाथ चतुर्वेदी (बटेश्वर/देहरादून)का देहांत दिनाँक 9 जनवरी 2025 को देहरादून में हो गया।

* श्री नरेन्द्र कुमार चतुर्वेदी (कानू भैया) एडवोकेट पुत्र स्व.श्री नरोत्तम जी चतुर्वेदी का असामयिक निधन 9 जनवरी 2025 को हो गया।

* श्रीमती कामिनी चतुर्वेदी पत्नी श्री हृदय नाथ चतुर्वेदी का स्वर्गवास 71 वर्ष की आयु में कोठी कैस्त,जसवंत नगर,इटावा में दिनांक 07/01/25 को आगरा में हो गया।

* श्री अशोक चतुर्वेदी पुत्र स्व.श्री विष्णु दत्त जी (बिजकौली/अलीगढ़/नोएडा) का दिनांक10 जनवरी 25 को नोएडा में निधन हो गया है।

* एड. श्री विनोद कुमार चतुर्वेदी पुत्र स्व.श्री विश्वनाथ चतुर्वेदी (तरसोखर / कटनी) (पूर्व प्रिंसिपल,संजय गांधी लॉ कॉलेज,कटनी) का लंबी बीमारी के बाद दिनाँक 11/01/25 को दुखद निधन हो गया।

* श्रीमती सुधा चतुर्वेदी पत्नी डॉ. एल.के. चतुर्वेदी (मैनपुरी/चंडीगढ़/भोपाल) का 76 वर्ष की आयु में दिनाँक 7 जनवरी 25 को निधन हो गया।

* नीलम चौबे पत्नी अनंत चौबे (जयपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 17 जनवरी 2025 को हो गया।

* श्रीमती पदमा चतुर्वेदी पत्नी स्व. डॉ. विपिन कुमार चतुर्वेदी (कमतरी/टूंडला) का स्वर्गवास 14 जनवरी 2025 को हो गया।

* श्री पंकज चतुर्वेदी (कोतमा) का निधन दिनाँक 15/01/25 को हो गया।

* श्रीमती विदुषी चतुर्वेदी पत्नी स्व.श्री धर्म शंकर जी चतुर्वेदी का असामयिक निधन 14 जनवरी 2025 को हो गया।

* श्रीमती विनीता पत्नी सूर्यकांत,मोहन (पुरा/ रिसड़ा) का स्वर्गवास दिनाँक 14 जनवरी 2025 रिसड़ा में हो गया। सूर्यकांत जी महासभा सहमंत्री अभयराज जी के भाई हैं।

* श्रीमती गुलाब देवी चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री मृगेंद्र नाथ (फ़रौली/बरेली) का निधन दिनाँक 14 जनवरी 2025 को 96 की उम्र में बरेली में हो गया।

* श्रीमती उमा चतुर्वेदी पत्नी स्व० हरीश चतुर्वेदी (धमतरी/लखनऊ) का 18 जनवरी 25 को लखनऊ में लगभग 74 वर्ष की उम्र में निधन हो गया है।

* श्री हरिश्चंद्र चतुर्वेदी (हाकिम जी) पुत्र स्व. श्री गिरजा शंकर चतुर्वेदी (चंद्रपुर/ग्वालियर) का स्वर्गवास 9 जनवरी 2025 को हो गया।

* श्री सुरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी जी (होलीपुरा, बीच का मोहल्ला) का आज दिनाँक 19/01/25 का अमेरिका में निधन हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

हमारे प्रेरणास्रोत

पूज्यनीय स्वर्गीय श्री उमेश चंद्र चतुर्वेदी

सेवानिवृत उप पुलिस अधीक्षक, म.प्र.

जन्म : 05.01.1937 – बैकुंठ गमन : 01.02.2024

सुपुत्र : स्वर्गीय श्रीमती चंद्रा देवी

एवम् स्वर्गीय श्री देवकृष्ण चतुर्वेदी, तरसोखर

श्रद्धावनत

पत्नी श्रीमती इंद्रा चतुर्वेदी एवम् समस्त परिवार

पता : 98 आजाद नगर उज्जैन, म. प्र.–456010

(र.क्र. 3067)

विनम्र श्रद्धांजलि

स्व. श्री हृदय नाथ चतुर्वेदी

(पुत्र स्व. श्री नरसिंह दास चतुर्वेदी एवं
स्व. श्रीमति सावित्री चतुर्वेदी, होलीपुरा/भोपाल)

जन्म : माघ कृष्ण पक्ष द्वितीया
दिनांक : 21–01–1935

निर्वाण : मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष पंचमी
दिनांक : 06–12–2024

भाई – कृष्णा कांत, यदुवेश कांत
श्री संदीप–श्रीमती अर्चना (पुत्र–पुत्रवधु), श्रीमती अंजू, (पुत्रवधु),
श्रीमती दीपांशी – श्री अक्षय (पौत्री–पौत्री दामाद),
संचित (पौत्र) एवं समस्त हवेली परिवार।

डी–87, पटेल नगर, रायसेन रोड, नियर न्यू नर्मदा वॉटर टंकी, भोपाल, (म.प.), 462022
मो. : 98932–62020, 98264–98698, 94069–29518, 73542–01255

विनम्र श्रद्धांजलि

श्री धीरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी

(होलीपुरा/कानपुर)

सुपुत्र : स्व. श्री गणपत राय चतुर्वेदी

जन्म – 14.03.1950

देहावसान –15.12.2024

श्रध्दावनत

समस्त आनन्द सिंह चतुर्वेदी परिवार,होलीपुरा

(र.क्र. 3073)

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

छठवीं पुण्यतिथि

स्व. टीकाशंकर चतुर्वेदी (भइयोले)

पुत्र स्व. मोहन लाल चतुर्वेदी

(स्वर्गवास– 14.02.2019)

दसवीं पुण्यतिथि

स्व. विमला चतुर्वेदी

पत्नी स्व. टीकाशंकर चतुर्वेदी

(स्वर्गवास– 25.02.2015)

न जायते म्रियते वा कदाचिन, नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो, न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

उनकी आंखों में दुनिया को देखा था, उनके पास हर परेशानी का हल था ।
उनकी बातों से सुकून मिलता था, उनके होने से घर का एक कोना घिरा था ।
उनकी तस्वीर देख आज नम हैं आखें हमारी, उनके आशीर्वाद और स्नेह से ही आबाद हैं दुनिया हमारी।

श्रृद्धावनत

पुत्र : लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी, पुत्र - पुत्रवधु : मनीष-निधी चतुर्वेदी (फरौली/गाजियाबाद)
पुत्री- दामाद : राखी- अनूप चतुर्वेदी (तालगाँव/राउरकेला)
पौत्र : दीपांशु, सौमित्र, पौत्री : सिद्धी, धेवती : हर्षिता

निवास

301, टॉवर –17, गुलमोहर गार्डन, राज नगर एक्सटेंशन, गाजियाबाद–201017 (उ.प्र.)
मो. : 9312221747, 9999944871, 9971063008

(र.क्र. 2300) 6/12

श्री रविकांत चौबे

सुपुत्र स्व. भैरों प्रसाद चौबे (होलीपुरा/हरदा)

पिता जी – स्वर्गीय भैरो प्रसाद चौबे (होलीपुरा/हरदा)
माता जी – स्वर्गीय पुष्पा देवी चौबे
पत्नी – श्रीमती मृदुला चौबे
पुत्र – राहुल– नेहा चौबे

नाती – शाश्वत राहुल चौबे
सुपुत्री–दामाद – पारुल–अनूप चतुर्वेदी
रोहित अनूप चतुर्वेदी
सुरभि अनूप चतुर्वेदी

अंजुल– प्रीतकमल चतुर्वेदी
समर्थ –प्रीतकमल चतुर्वेदी

शैलजा अमित चौबे
दिव्यांश अमित चौबे

भाई – केशव चंद्र चौबे

चित्रा – पीयूषकांत चौबे, धवल पीयूषकांत, उज्जवल पीयूषकांत

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' फरवरी 2025

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak2024.chandrika@gmail.com

Best Wishes From

Mr. Vinod Chaturvedi
Chief Human Resources Officer (CHRO)
Shree Cement Limited,
Cyber City, Gurgaon – 122002
Mobile – 8108158116
Email : vinod.chaturvedi@shreecement.com / vinodc.99@gmail.com

&

Mrs. Vatsala Chaturvedi
Mobile: 7738223130

Ms. Aashiree Chaturvedi
Lead Digital Marketing
Blue Dart - DHL Group
Andheri East, Mumbai
Mobile: 8879422506

Master Shreay Chaturvedi
Sales Associate
Tech Mahindra
Manchester (UK)
Mobile: +44 7947161962

"Kachpura" Niwasi – "Mumbai" & "Gurgaon" Pravasi

~ In Memory and Blessings from our Parents and Elders ~

Father: Late Sh. Pratap Chand Chaturvedi Ji
Mother: Late Smt. Urmila Ji (Beto Ji)

Grand Father – Late Sh. Dwarka Prasad Ji
Grand Mother: Late Smt. Sarbato Ji

Maternal Grandfather: Late Sh. Lakshmi Pat Ji
Maternal Grandmother: Late Smt. Rama Devi
(Neem Mandi, Mainpuri)

Uncle & Aunt:
Late Sh. Munn Lal Ji & Late Smt. Bimla Devi Ji

Late Sh. Haresh Ji & Late Smt. Raj Kumari Ji

Late Sh. Devendra Ji (Lalla Ji) & Late. Smt. Shailja Ji

Sh. Ramakant Ji & Smt. Vimla Ji
(289/9 Moti Ngr, Lucknow)

Sh. Krishna Kant Ji & Smt. Rita Ji
(206 kanchempearl, Laxmiganga Enclave, Pipeline Road, Hyderabad)

Elder Brother: Late Sh. Ashok Ji

Bua Ji & Phupha Ji:

Late. Smt.Bimla Ji & Late Sh. Harkumar Ji
(Bateshwar)

Smt. Shobha Ji & Late. Sh. Ajit Ji
(Hindaun / Palam, Delhi)

Father-In-law: Late Sh. Brijnath Ji
Mother-In-law: Late Smt. Mohini Ji
(Etawah)

Grand Father-In-law: Late Sh. Hari Narayan Ji
Grand Mother-In-law: Late Smt. Asharphi Ji

Grand Maternal Father-In-law:Late Sh.Kailash ji
Grand Maternal Mother-In-law:Late Smt.Usha Rani Ji
(Late.Smt.Sita Ji)
(Mishrana, Mainpuri)

Grand Maternal Uncle-In –law: Late Sh. Ashok Ji

Sister-In-law: Mrs. Renu
Brother-in-law: Sh. Saurabh
Nephew: Master Raghav
(Holipura / Kanpur)

Residences

Mumbai	Gurgaon	Manchester	Lucknow
702, Sea Nymph CHS, Green Field, A.B. Nair Road, Juhu Opposite, Juhu Post Office Mumbai - 400049 (Maharashtra)	MGF Vilas, SA – 406 Tower – J, DLF Phase 2 Akashneem Marg Sector 25 Gurgaon – 122002 (Haryana)	309, South Block Kampus Apartments 59, Chorlton Street M1 3FY Manchester (United Kingdom)	289/9 Moti Nagar Lucknow – 226004

(र.क्र. 2828) 6/12